મુદ્રક અને પ્રકાશક
જીવણજી ડાહ્યાભાઈ દેસાઈ
નવજીવન મુદ્રણાલય, કાળુપુર, અમદાવાદ

પહેલી આવૃત્તિ, પ્રત ૫,૦૦૦, માર્ચ, ૧૯૪૭

અનુક્રમણિકા

નિવેદન

આ નાનકડી ચોપડીનું નામ કહી દે છે કે, એ વ્યાકરણ નથી, પરંતુ તેમાં પ્રવેશ કરાવનાર સામાન્ય ભોમિયો અને શરૂનો મદદનીશ છે. વિદ્યાપીઠ તરફથી ચાલતી હિંદુસ્તાની 'પહલી' અને 'દૂસરી' પરીક્ષાઓ દ્વારા, તે ભાષામાં સીધો પ્રવેશ પામેલાને ધીમે ધીમે તે ભાષાના વ્યાકરણમાં પ્રવેશ પણ કરાવવો જોઈએ; તો પ્રત્યક્ષ ભાષામાં પ્રવેશ કરનારાને વ્યાકરણ પણ પોતાની આંગળી ઝાલવા આપી શકે. તે વિચારથી હિંદુસ્તાની પ્રચાર પરીક્ષામાં તીસરી પરીક્ષાના અભ્યાસ-ક્રમમાં વ્યાકરણ-પ્રવેશનો વિષય રાખવામાં આવ્યો છે. સામાન્યતઃ નીરસ નહિ તોય કઠણ ગણાતા આ વિષયમાં પ્રયાણ કરવાની સરળ સીધી પદ્ધતિ જ્ઞાત ઉપરથી અજ્ઞાત ઉપર જવાની જ હોય. તે અનુસાર, આ ચોપડીમાં ગુજરાતીની તુલનામાં હિંદુસ્તાની વ્યાકરણનાં કેટલાંક મુખ્ય બિંદુઓ રજૂ કરવામાં આવ્યાં છે. તે બિંદુઓ શ્રી. નગીનદાસ પારેખે તૈયાર કરેલાં છે. અને અગાઉ એક લેખરૂપે 'પ્રસ્થાન' માસિકમાં ઈ. સ. ૧૯૩૯માં પ્રસિદ્ધ થયાં હતાં. તે એમણે પ્રાથમિક શાળાનાં સાત ધોરણ ભણેલા નવા શિક્ષકો આગળ વ્યાખ્યાન રૂપે ચર્ચેલાં. એ અંગે તેમણે જ એના આદિમાં કરેલું નિવેદન અહીં ઉતારવાથી તેનો સારો પરિચય મળી જશે :—

"ગુજરાત વિદ્યાપીઠમાં આ વર્ષના (૧૯૩૯) જાનેવારી માસથી મે માસ સુધી જે શિક્ષક તાલીમ વર્ગ ચાલ્યો હતો, તેના અભ્યાસક્રમમાં હિંદુસ્તાનીને પણ સ્થાન હતું હિંદુસ્તાની ભાષાના એ અભ્યાસને અંગે એ વર્ગ આગળ મે બે વ્યાખ્યાનો આપ્યાં હતાં. એ વ્યાખ્યાનોનો હેતુ એટલો હતો કે, એ શિક્ષકો વર્ગનો અભ્યાસ પૂરો કરી પોતાને સ્થાને પહોંચી જાય ત્યાર પછી પણ હિંદુસ્તાનીનો અભ્યાસ કરવા ધારે તો કરી શકે એવી કેટલીક સૂચનાઓ એમને આપવી, અને હિંદુસ્તાની શીખવવામાં શરૂઆતમાં જે કેટલીક મુશ્કેલીઓ પડે છે, તેને વટાવવામાં બનતી મદદ કરવી. એ વર્ગમાં સૌ શિક્ષક ભાઈઓને એ વાતો ખૂબ

सूची

कहानी संग्रह

हारकी जीत

१

माँको अपने बेटे, साहूकारको अपने देनदार और किसानको अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनन्द आता है, वही आनन्द बाबा भारतीको अपना घोड़ा देखकर होता था। भगवद्भजनसे जो समय बचता, वह घोड़ेके अर्पण हो जाता। यह घोड़ा बड़ा सुन्दर था, बड़ा बलवान्। अिसके जोड़का घोड़ा सारे अिलाकेमें न था। बाबा भारती अिसे 'सुलतान' कहकर पुकारते, अपने हाथसे खरहरा करते, खुद दाना खिलाते, और देख देखकर प्रसन्न होते थे। अैसी लगन, अैसे प्यार, अैसे स्नेहसे कोई सच्चा प्रेमी अपने प्यारेको भी न चाहता होगा। अुन्होंने अपना सब कुछ छोड़ दिया था। रुपया, माल, असबाब, ज़मीन; यहाँ तक कि अुन्हें नागरिक जीवनसे सभी घृणा थी। अब अेक गाँवसे बाहर छोटे-से मन्दिरमें रहते और भगवान का भजन करते थे। परन्तु सुलतानसे बिछुड़नेकी वेदना अुनके लिये असह्य थी। 'मैं अिसके बिना नहीं रह सकूँगा,' अुन्हें अैसी भ्रांति-सी हो गयी। वह अिसकी चालपर लट्टू थे। कहते "अैसे चलता है, जैसे मोर घन-घटाको देखकर नाच रहा हो?", गाँवोंके लोग अिस प्रेमको देखकर चकित थे; कभी कभी कनखियोंसे अिसारे भी करते थे; परन्तु बाबा भारतीको अिसकी

परवाह न थी। जब तक संध्या समय सुलतानपर चढ़कर आठ-दस मीलका चक्कर न लगा लेते, अुन्हें चैन न आती।

खड्गसिंह अुस अिलाकेका प्रसिद्ध डाकू था। लोग अुसका नाम सुनकर काँपते थे। होते होते सुलतानकी कीर्ति अुसके कानों तक भी पहुँची। अुसका हृदय अुसे देखनेके लिये अधीर हो अुठा। वह अेक दिन दोपहरके समय बाबा भारतीके पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

बाबा भारतीने पूछा—" खड्गसिंह, क्या हाल है ? "

खड्गसिंहने सिर झुकाकर अुत्तर दिया—"आपकी दया है ? "

"कहो, अिधर कैसे आ गये ? "

" सुलतानकी चाह खींच लायी। "

" विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे। "

" मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है। "

" अुसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी। "

" कहते हैं, देखनेमें भी बड़ा सुन्दर है। "

" क्या कहना! जो अुसे अेक बार देख लेता है, अुसके हृदयपर अुसकी छवि अंकित हो जाती है। "

" बहुतदिनोंसे अभिलाषा थी; आज अुपस्थित हो सका हूँ।"

बाबा और खड्गसिंह, दोनों अस्तबलमें पहूँचे। बाबाने घोड़ा दिखाया घमंडसे, खड्गसिंहने घोड़ा देखा आश्चर्यसे। अुसने हजारों घोड़े देखे थे; परन्तु अैसा बाँका घोड़ा अुसकी आँखोंसे कभी न गुजरा था। सोचने लगा—" भाग्यकी बात है।

अैसा घोड़ा खड्गसिंहके पास होना चाहिये था। अिस साधुको अैसी चीजोंसे क्या लाभ ?” कुछ देर तक आश्चर्यसे चुपचाप खड़ा रहा। अिसके बाद हृदयमें हलचल होने लगी। बालकोंकी-सी अधीरतासे वह बोला—“ परन्तु बाबाजी, अिसकी चाल न देखी, तो क्या देखा ? ”

बाबाजी भी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तुकी प्रशंसा दूसरेके मुखसे सुननेके लिये अुनका हृदय भी अधीर हो अुठा। घोड़ेको खोलकर बाहर लाये, और अुसकी पीठपर हाथ फेरने लगे। अेकाअेक अुचककर सवार हो गये। घोड़ा वायु-वेगसे अुड़ने लगा। अुसकी चाल देखकर, अुसकी गति देखकर, खड्गसिंहके हृदयपर साँप लोट गया। वह डाकू था, और जो वस्तु अुसे पसंद आ जाय, अुसपर अपना अधिकार समझता था। अुसके पास बाहु-बल था, और आदमी थे। जाते जाते अुसने कहा— “ बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा। ”

बाबा भारती डर गये। अब अुन्हें रातको नींद न आती थी- सारी रात अस्तबलकी रखवालीमें कटने लगी। प्रति क्षण खड्गसिंहका भय लगा रहता। परन्तु कअी मास बीत गये, और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ लापरवाह हो गये, और अिस भयको स्वप्नके भयकी नाअीं मिथ्या समझने लगे।

२

संध्याका समय था। बाबा भारती सुलतानकी पीठपर सवार घूमने जा रहे थे। अिस समय अुनकी आँखोंमें चमक थी,

मुखपर प्रसन्नता। कभी घोड़के शरीरको देखते, कभी रंग को, और मनमें फूले न समाते थे।

सहसा अेक ओरसे आवाज़ आयी—"ओ बाबा! अिस कँगलेकी भी बात सुनते जाना।"

आवाज़में करुणा थी। बाबाने घोड़को थाम लिया। देखा, अेक अपाहिज वृक्षकी छायामें पड़ा कराह रहा है। बोले—"क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है?"

अपाहिजने हाथ जोड़कर कहा—"बाबा, मैं दुखिया हूँ। मुझपर दया करो। रागाँवाला यहाँसे तीन मील है; मुझे वहाँ जाना है। घोड़ेपर चढ़ा लो, परमात्मा तुम्हारा भला करेगा।"

"वहाँ तुम्हारा कौन है?"

"दुर्गादत्त वैद्यका नाम आपने सुना होगा। मैं अुनका सौतेला भाअी हूँ।"

बाबा भारतीने घोड़से अुतरकर अपाहिजको घोड़ेपर सवार किया, और स्वयं लगाम पकड़कर धीरे धीरे चलने लगे।

सहसा अुन्हें अेक झटका-सा लगा और लगाम हाथसे छूट गयी। अुनके आश्चर्यका ठिकाना न रहा, जब अुन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़की पीठकर तनकर बैठा है, और घोड़ेको दौड़ाये लिये जा रहा है। अुनके मुखसे भय, विस्मय और निराशासे मिली हुअी चीख निकल गयी। यह अपाहिज खड्गसिंह डाकू था।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे, और अिसके पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बलसे चिल्लाकर बोले—"ज़रा ठहर जाओ!"

खड्गसिंहने यह आवाज़ सुनकर घोड़ा रोक लिया, और अुसकी गर्दनपर प्यारसे हाथ फेरते हुअे कहा--" बाबाजी, यह घोड़ा अब आपको न दूँगा।,'

" परन्तु अेक बात सुनते जाओ।"

खड्गसिंह ठहर गया। बाबा भारतीने निकट जाकर अुसकी ओर अैसी आँखोंसे देखा जैसे बकरा कसाअीकी ओर देखता है, और कहा—" यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका। मैं तुमसे अिसे वापस करनेके लिये न कहूँगा। परन्तु खड्गसिंह, केवल अेक प्रार्थना करता हूँ, अुसे अस्वीकार न करना; नहीं तो मेरा दिल टूट जायगा।"

" बाबाजी, आज्ञा कीजिये। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा "

" घोड़ेका नाम न लो, मैं तुमसे अिसके विषयमें कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि अिस घटनाको किसीके सामने प्रकट न करना।"

खड्गसिंहका मुँह आश्चर्यसे खुला रह गया। अुसका विचार था कि मुझे अिस घोड़ेको लेकर यहाँसे भागना पड़ेगा। परन्तु बाबा भारतीने स्वयं अुससे कहा—" अिस घटनाको किसीके सामने प्रकट न करना।" अिससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड्गसिंहने बहुत सिर मारा, परन्तु कुछ समझ न सका। हारकर अुसने अपनी आँखें बाबा भारतीके मुखपर गड़ा दीं, और पूछा--" बाबाजी, अिसमें आपको क्या डर है?"

सुनकर बाबा भारतीने अुत्तर दिया--" लोगोंको यदि अिस घटनाका पता लग गया तो वे किसी गरीबपर विश्वास

न करेंगे।" और यह कहते कहते अुन्होंने सुलतानकी ओरसे अिस तरह मुँह मोड़ लिया, जैसे अुनका अुससे कभी कोअी सम्बन्ध ही न था।

बाबा चले गये; परन्तु अुनके शब्द खड्गसिंहके कानोंमें अुसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था,—"कैसे अूँचे विचार है! कैसा पवित्र भाव है! अुन्हें अिस घोड़ेसे प्रेम था। अिसे देखकर अुनका मुख फुलकी नाअीं खिल जाता था। कहते थे, अिसके विना मैं रह न सकूँगा। अिसकी रखवालीमें वह कअी रातें सोये नहीं; भजनभक्ति न कर रखवाली करते रहे। परन्तु आज अुनके मुखपर दुःखकी रेखा तक न दीख पड़ती थी। अुन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग गरीबोंपर विश्वास करना न छोड़ दें। अुन्होंने अपनी निजकी हानिको मनुष्यत्वकी हानिपर न्योछावर कर दिया।

अैसा मनुष्य मनुष्य नहीं, देवता है!"

३

रात्रिके अंधारमें खड्गसिंह बाबा भारतीके मन्दिरमें पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाशपर तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूरपर गाँवके कुत्ते भौंकते थे। मन्दिरके अन्दर कोअी शब्द सुनायी न देता था। खड्गसिंह सुलतानकी वाग पकड़े हुअे था। वह धीरे धीरे अस्तबलके फाटकपर पहुँचा। फाटक किसी वियोगीकी आँखोंकी तरह चौपट खुला था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहारा देते थे; परन्तु आज अुन्हें किसी चोरी, किसी डाकेका भय न था। हानिने अुन्हें हानिकी ओरसे बेपरवाह कर दिया था। खड्गसिंहने आगे बढ़कर सुलतानको अुसके स्थानपर बाँध

दिया, और बाहर निकलकर सावधानीसे फाटक बन्द कर दिया। अिस समय अुसकी आँखोंमें नेकीके आँसू थे।

अंधकारमें रात्रिने तीसरा पहर समाप्त किया, और चौथा पहर आरम्भ होते ही बाबा भारतीने अपनी कुटियासे बाहर निकल ठंडे जलसे स्नान किया। अुसके पश्चात् अिस प्रकार, जैसे कोअी स्वप्नमें चल रहा हो, अुनके पाँव अस्तबलकी ओर मुड़े। परन्तु फाटकपर पहुँचकर अुनको अपनी भूल प्रतीत हुअी। साथ ही घोर निराशाने पाँवोंको मन मन-भरका भारी बना दिया। वह वहीं रुक गये।

घोड़ेने स्वाभाविक मेधासे अपने स्वामीके पाँवोंकी चापको पहचान लिया और जोरसे हिनहिनाया।

बाबा भारती दौड़ते हुअे अन्दर घुसे, और अपने घोड़ेके गलेसे लिपटकर अिस प्रकार रोने लगे, जैसे बिछुडा हुआ पिता चिरकालके पश्चात् पुत्रसे मिलकर रोता है। बार बार अुसकी पीठपर हाथ फेरते, बार बार अुसके मुँहपर थपकियाँ देते और कहते--" अब कोअी गरीबोंकी सहायतासे मुँह नहीं मोड़ेगा।"

थोड़ी देरके बाद जब वह अस्तबलसे बाहर निकले, तो अुनकी आँखोंसे आँसू बह रहे थे। ये आँसू अुसी भूमिपर, ठीक अुसी जगह गिर रहे थे, जहाँ बाहर निकलनेके बाद खड्गसिंह खड़ा होकर रोया था।

दोनोंके आँसुओंका अुसी भूमिकी मिट्टीपर परस्पर मिलाप हो गया।

दुखिया

१

पहाड़ी देहात, जंगलके किनारेके गाँव और बरसातका समय, वह भी अुषाकाल। बड़ा ही मनोरम दृश्य था। रातकी वर्षासे आमके वृक्ष सराबोर थे। अभी पत्तोंपरसे पानी ढुलक रहा था। प्रभातके स्पष्ट होनेपर भी धुँधले प्रकाशमें सड़कके किनारे, आम्रवृक्षके नीचे, अेक बालिका कुछ देख रही थी। 'टप' से शब्द हुआ, बालिका अुछल पड़ी, गिरा आम अुठाकर अंचलमें रख लिया (जो पॉकेटकी तरह खोंसकर बना हुआ था)

दक्षिण-पवनने अनजानमें फलसे लदी हुअी डालियोंसे अठखेलियाँ की। अुनका संचित धन अस्त-व्यस्त हो गया दो-चार गिर पड़े। बालिका अूषाकी किरणोंके समान ही खिल पड़ी। अुसका अंचल भर गया। फिर भी आशामें खड़ी रही व्यर्थ प्रयास जानकर लौटी, और अपनी झोपड़ीकी ओर चल पड़ी। फूसकी झोंपड़ीमें बैठा हुआ अुसका अंधा बूढ़ा बाप अपनी फूटी हुअी चिलम सुलगा रहा था। दुखियाने आते ही आँचलसे सात आमोंमेंसे पाँच निकालकर बापके हाथमें रख दिये, और स्वयं बरतन माँजनेके लिये डबरेकी ओर चल पड़ी।

बरतनोंका विवरण सुनिये। अेक फूटा बटुआ, अेक लोहंडी और लोटा, यही अुस दीन परिवारका अुपकरण था। डबरेके किनारे छोटी-सी शिलापर अपने फटे हुअे वस्त्र सँभाले हुये बैठकर दुखियाने बरतन मलना आरम्भ किया।

२

अपने पीसे हुअे बाजरेके आटेकी रोटी पकाकर दुखियाने बूढ़े बापको खिलाया, और स्वयं बचा हुआ खा-पीकर पास ही के महुअेके वृक्षकी फैली जड़ोंपर सिर रखकर लेट रही। कुछ गुनगुनाने लगी। दुपहरी ढल गयी। अब दुखिया अुठी, और खुरपी-जाला लेकर घास काटने चली। ज़मींदारके घोड़के लिये घास वह रोज दे आती थी। कठिन परिश्रमसे अुसने घास काटकर अेकत्र की, फिर अुसे डबरेमें रखकर धोने लगी।

सूर्यकी सुनहली किरणें बरसाती आकाशपर नवीन चित्र-कारकी तरह कअी प्रकारके रंग लगाना सीखने लगीं। अमराअी और ताड़-वृक्षोंकी छाया अुस शाद्वल जलमें पड़कर प्राकृतिक चित्रोंका सृतन करने लगी। दुखियाको विलंब हुआ, किंतु अभी अुसकी घास धो नहीं गयी। अुसे जैसे अिसकी कुछ परवाह न थी। अिसी समय घोड़ेकी टापोंके शद्बने अुसकी अेकाग्रताको भंग किया।

जमींदार-कुमार संध्याको हवा खानेके लिये निकले थे। बेगवान 'बालोतर' जातिका कुम्मेद पचकल्यान आज गरम हो गया था। मोहनसिंहसे बेकाबू होकर वह बगटुट भाग रहा था। संयोग! जहाँपर दुखिया बैठी थी, अुसीके समीप ठोकर लेकर घोड़ा गिरा। मोहनसिंह भी बुरी तरह घायल होकर गिरा। दुखियाने मोहनसिंहकी सहायता की। डबरेसे जल लाकर घावोंको धोने लगी। मोहनने पट्टी बाँधी, घोड़ा भी अुठकर शांत खड़ा हुआ। दुखिया अुसे टहलाने लगी थी। मोहनने कृतज्ञताकी दृष्टिसे दुखियाको देखा। वह अेक सुशिक्षित

युवक था। अुसने दरिद्र दुखियाको अुसकी सहायताके बदले दो रुपये देने चाहे। दुखियाने हाथ जोड़कर कहा—"बाबूजी, हम तो आप ही के गुलाम हैं! अिसीघोड़ेको घास देनेसे हमारी रोटी चलती है।"

अब मोहनने दुखियाको पहचाना। अुसने पूछा—

"क्या तुम रामगुलामकी लड़की हो?'

"हाँ बाबूजी!"

"अुसे बहुत दिनोंसे देखा नहीं?"

"बाबूजी, अुसको आँखोंसे दिखायी नहीं पड़ता।"

"अहा, हमारे लड़कपनमें वह हमारे घोड़ेको, जब हम अुसपर बैठते थे, पकड़कर टहलाता था। वह कहाँ है?"

"अपनी मढ़ीमें।"

"चलो, हम वहाँ तक चलेंगे।"

"किशोरी दुखियाको न जाने क्यों संकोच हुआ। अुसने कहा—

"बाबूजी, घास पहुँचानेमें देर हुअी है, सरदार बिगड़ेंगे।"

"कुछ चिंता नहीं, तुम चलो।"

लाचार होकर दुखिया घासका बोझा सिरपर रखे हुअे झोपड़ीकी ओर चल पड़ी। घोड़ेपर मोहन पीछे पीछे था।

"रामगुलाम, तुम अच्छे तो हो?"

"राजा! सरकार! जुग जुग जीओ बाबू!" बूढेने बिन देखे अपनी टूटी चारपाअीसे अुठते हुये, दोनों हाथ अपने सिर तक ले जाकर कहा।

"रामगुलाम, तुमने पहचान लिया ?"

"नहीं कैसे पहचानें सरकार! यह देह सरकारके अन्नसे पली है!" अुसने कहा!

"तुमको कुछ पेंशन मिलती है या नहीं ?"

"आप ही का दिया खाते हैं बाबूजी! अभी लड़की हमारी जगहपर घास देती है।"

भावुक नवयुवकने फिर प्रश्न किया—"क्यों रामगुलाम, जब अिसका विवाह हो जायगा, तब कौन घास देगा ?"

रामगुलामके आनंदाश्रु दुखकी नदी होकर बहने लगे। बड़े कष्टसे अुसने कहा—"क्या हम सदा जीते रहेंगे ?"

अब मोहनसे न रहा गया। वही दो रुपये अुस बुड्ढेको देकर चलते बना। जाते जाते कहा—"फिर कभी।"

दुखियाको भी घास लेकर वहीं जाना था, वह पीछे चली।

ज़मींदारकी पशुशाला थी। हाथी, अूँट, घोड़ा, बुलबुल, भैंसा, गाय, बकरे, बैल, लाल, किसीकी कमी नहीं थी। अेक दुष्ट नजीब खाँ अिन सबोंका निरीक्षक था। दुखियाको देरसे आते देखकर अुसे अवसर मिला। बड़ी नीचतासे अुसने कहा—"मारे जवानीके तेरा मिज़ाज ही नहीं मिलता। कलसे तेरी नौकरी बंद करा दी जायेगी। अितनी देर।"

दुखिया कुछ नहीं बोलती, किंतु अुसे अपने बुढ़े बापकी याद आ गयी। अुसने सोचा, किसी तरह नौकरी बचानी चाहिये। तुरंत कह बैठी—"छोटे सरकार घोड़े परसे गिर पड़े थे।

अुन्हें मढ़ुअी तक पहुँचानेमें देर हुअी।"

"चुप हरामजादी। तभी तो मेरा मिज़ाज और बिगड़ा है। अभी बड़े सरकारके पास चलते हैं।"

वह अुठा, और चला। दुखियाने घासका बोझा पटका और रोती हुअी झोंपड़ीकी ओर चलती हुअी। राह चलते अुसे डबरेका सायंकालीन दृश्य स्मरण होने लगा। वह अुसीमें भूलकर अपने घर पहुँच गयी।

काठका घोड़ा

कभी आप लोग शंकरनगर गये होंगे तो वहाँ रत्नबाज़ार त्रिपोलियाके नुक्कड़पर कबाड़ियोंकी दूकानें आपने जरूर देखी होंगी। अिन दूकानोंमें पुराने असबाब—मेज़, कुर्सी, तख्त, चारपाअी आदिसे लेकर पुरानी तसवीरें, फटे वस्त्र, कैंची, चाकू, ताला और कुंजी तक छोटी-बड़ी प्रायः सभी प्रकारकी गृहस्थीकी पुरानी सामग्रियाँ—बिका करती हैं। कबाड़ी लोग नगर-भरमें घूम-घामकर पुरानी वस्तुअें मोल ले आते हैं और अुन्हींको फिर मरम्मत कर-कराके बेचा करते हैं। हजारों अैसे मनुष्य हैं जो अिन पुरानी वस्तुओंको मोल लेकर अपना काम चलाया करते हैं। अूपर कहे हुअे अेक कबाड़ीकी दुकानके सामने बहुत दिनोंसे अेक काठका घोड़ा खड़ा हुआ धूल छान रहा था।

घोड़ा बालकोंकी सवारीके योग्य बना था और विशेषता अुसमें यह थी कि अुसके पैरोंमें धनुषकी भाँति दो टेढ़ी लकड़ियाँ लगी हुअी थीं, जिसके कारण कुर्सीपर बैठनेवाला बालक अपना शरीर हिला हिलाकर घोड़ेपर चढ़नेका आनन्द अनायास पा सकता था। बैठनेवाला गिर न पड़े अिसलिये पीठपर अेक कठहरा भी लगा हुआ था। अेक दिन कबाड़ी अुस घोड़ेपर जमी हुअी धूलको झाड़कर, अुसे धोकर फिर दूसरी जगह दूकानके सामने रख रहा था, जिससे राह चलनेवालोंकी दृष्टि अुसपर अनायास पड़ सके, कि अितनेमें अुसके पड़ोसी दूकानवालेने कहा —

"क्यों मियाँ जुम्मन शेख! अिस घोड़ेको तो बहुत दिनोंसे धरे हुअे हो, कोअी लेता ही नहीं। मुझे न दे डालो? मैं अिसे अपने लड़केको दे दूँगा!"

जुम्मन शेखने अुस पड़ोसीसे कहा —"वाह, खूब कहा! ग्राहक और मौतका भी कहीं कुछ ठिकाना है? न जाने कब आ जाय। कमानीदार घोड़ेकी क़दर भला सब लोग थोड़े ही कर सकते हैं?"

जब वे दोनों अिस भाँति आपसमें बातें कर रहे थे, ठीक अुसी समय अेक भद्र पुरुष, जिनकी अवस्था ६०, ६५ वर्षसे कम न होगी, जो अुधरसे हाथमें छड़ी लेकर कहीं जा रहे थे, जुम्मनकी बात कानमें पड़ते ही खड़े हो गये और पूछने लगे— "कमानीदार घोड़ा कैसा? देखें, कहाँ है? ओ, यही? देखें, देखें! अरे अिसके माथेपर यहाँ दो तलवारें कैसी बनी हैं? कुछ समझमें नहीं आता!"

यों कहकर वे बड़े ध्यानसे फिर घोड़ेके माथेपर अेक दूसरेको काटती हुअी दो तलवारोंके चित्रको और अुसकी अद्भुत बनावटको देखने लगे। फिर पूछा—"यह घोड़ा तुमको कब और कहाँ मिला ?"

कबाड़ीने कहा—"महाराज ! आज ५, ६ महीने हुअे होंगे, यह तो मुझे पानकी मंडीके अेक मकानमें मिला था। यह अेक छोटे-से लड़केका था। जब अुसके बापने अिसे बेच डाला तो वह लड़का बेचारा ज़मीनपर लोट लोटकर रोने लगा।"

भद्र पुरुषने कहा—"हूँ, छोटे लड़केका ! और वह रोने लगा ! अच्छा, तुम अिसे कितनेमें बेचोगे ?"

जुम्मनने कहा—"महाराज ! चार रुपयेसे अेक कौड़ी भी कम न लूँगा। देखिये, बड़ा मजबूत है। रंग जरा भी नहीं बिगड़ा है।"

भद्र पुरुषने कहा—"चार रुपये ? अच्छा, मुँह-माँगा दाम देता हूँ। पर अेक मजदूर मेरे साथ कर दो और अुसे अुसी मकानका पता बता दो जहाँसे तुम अिस घोड़ेको लाये थे।" यों कहकर अुन्होंने रुपये निकालकर कबाड़ीको दे दिये। कबाड़ीने दूकानके भीतरसे अेक लड़केको बुलाकर कहा—

"अरे देख, पानकी मंडीमें रामचन्द्र तिवारीकी बैठक तो तुझे मालूम है न ? अुसीके पिछवाड़े तीन खिड़कियोंवाला पीले रंगका अेक छोटा-सा मकान है। वहीं सरकारके साथ अिस घोड़ेको पहुँचा आ।

लड़का पता समझकर, घोड़ेको सिरपर रखकर, चलता हुआ। भद्र पुरुष भी अुसके पीछे हो लिये।

अुनके चले जानेके पीछे जुम्मनके पड़ोसीने कहा—"यार, मेरे माँगते ही तेरा घोड़ा तो बिक गया, पर तूने अपने ग्राहकको भी पहचाना ! ये विजयपुरके ज़मींदार समरवीरसिंह हैं। अिनके बराबर दौलतवाला अिस ज़िले-भरमें दूसरा कोअी नहीं है। पर बेचारेके कोअी लड़का नहीं है।"

जब दूकानवाले अिस भाँति आपसमें बातें कर रहे थे, अुस समय समरवीरसिंह घोड़ा लेकर पानकी मंडीमें बतलाये हुअे छोटे मकानकी ओर चले जा रहे थे। जब वहाँपर पहुँच गये, और लड़केने कहा—"यही मकान है" वृद्धने मकानके किवाड़ोंको अपनी छड़ीसे खटखटाया। अिसे सुनकर अेक सुन्दरी युवती, गोदमें अेक बालकको लेकर, भीतरसे निकलकर, वृद्धकी ओर देखने लगी। वृद्धने देखा, यह है तो बहुत निर्धन; परन्तु अिसका शील-स्वभाव भले घरकी बहू-बेटियोंका-सा जान पड़ता है। पूछा—"देखो तो सही, यह घोड़ा तुम्हारा ही है न ?"

युवती घोड़ा देखकर चौंक-सी पड़ी, और आँखोंमें आँसू भर-जानेसे थोड़ी देरतक कुछ बोल न सकी। अितनेमें अुसके पीछेसे अेक चार वर्षका बालक दौड़कर बाहर निकल आया और बोला—"अजी, यह मेरा घोड़ा है। मैं तो अिसपर बैठकर घुड़-दौड़ किया करता था। लाओ, मुझे दे दो"

बालककी माता अुसे डाँटने लगी। परन्तु वृद्धने अुसे रोककर कहा—"मैंने अिसे देखते ही समझ लिया था कि अिसके लिये कोअी बालक बहुत रोता रहा होगा। लो भाअी, तुम अपना घोड़ा ले लो।

" और बेटी, तुम घबराओ मत। मुझे तुम अपना ही कोअी समझ लो। मैं यहाँका रहनेवाला नहीं हूँ। आज बाज़ारमें घूमने को निकला था। राहमें अिस घोड़ेको देखते ही जीमें आया कि अिसका मालिक कोअी बालक है। वह अिसे खोकर जरूर रो रहा होगा। सो मैं पता लगाता हुआ अिसे तुम्हारे पास ले आया हूँ।"

देवीने आँसू पोंछकर बड़े विनयसे कहा—" आप बड़े दयालु हैं। बालकोंसे आपका बड़ा प्रेम जान पड़ता है। रन्नूको सचमुच अिसे खोकर बड़ा भारी दुःख था। मैं किस तरह आपकी अिस दयाका बदला दूँ? अीश्वर आपका भला करे।"

बूढ़ेने कहा—" दयाका बदला पीछे दे देना। अब दया करके मुझे थोड़ी देर अपने यहाँ बैठने दो। मै बूढ़ा आदमी बहुत दूर पैदल चलकर आया हूँ।"

अिस बातको सुनकर वह स्त्री कुछ सोचने लगी, फिर बोली—" आअिये, मेरे पति घरमें नहीं हैं; पर आप मेरे पिताके बराबर हैं। आअिये, यहाँपर बैठ जाअिये।" यों कहकर अुसने अेक टूटी-सी चारपाअी बिछा दी और पंखा हाथमें लेकर वृद्धके शरीरपर झलने लगी।

वृद्धने तब पूछा—" तुम्हारे पति कुछ काम करते हैं?"

स्त्री अुदास होकर बोली—" नहीं, आज कितने दिनोंसे कहीं नौकरी-चाकरी कुछ भी नहीं है। जो नौकरी ही होती, तो रन्नूके घोड़े तकको बेचनेकी पारी क्यों आती? घरमें बेचने लायक जो कुछ था, सब बेचकर पेटमें धर लिया है। अब देखें भगवानकी क्या मर्ज़ी है।"

वृद्धने कहा, "हाँ, तुमलोगोंको बहुत दुःख मिल चुके हैं। पर कौन जाने, नारायण अब चाहे तो भला ही करेगा। घबराओ मत। सब दिन अेक-से नहीं जाते। जब बहुत ही बुरे दिन आ जाते हैं, अुस समय वे फिर अच्छे होने लगते हैं। अिसी तरह समय पलटा खाया करता है।"

स्त्रीने कुछ थकावटका भाव दिखलाकर कहा, "हाँ।"

वृद्धने पूछा, "तुम्हारे मित्र या अपने और लोग भी तो होंगे ?

स्त्रीने सिर हिलाकर कहा, "नहीं मेरे मायकेमें तो कोअी भी नहीं है। अेक मेरी माँ थी, वह भी मेरे ब्याहके पीछे ही मर गयी। मेरे ससुरालवाले बड़े आदमी हैं। पर अुनसे और मेरे पतिसे लड़ाअी है। मेरी मातापर दया करके, अुसे दुखिया देखकर, मेरे पतिने किसीसे बिना कहे-सुने मेरे साथ विवाह कर लिया था। अिसलिये मेरे ससुर अुनसे नाराज हो गये और अुनको घरसे निकाल दिया। महाराज, हम हैं तो बड़े गरीब; पर पहले अितने गरीब नहीं थे। मेरे पिताके स्वर्गवास होने ही से हमारे सिर बिजली आ गिरी। क्या करूँ, मेरे भाग्यमें दुःख भोगना ही लिखा था।"

बूढ़ेने कुछ काँपती हुअी बोलीसे कहा, "हाँ, अबतक तो तुमने बहुत दुःख झेले हैं। तुम्हारे पतिने पिताकी बात नहीं मानी थी; पर तुमने भला क्या अपराध किया है ? फिर तुम किसी कुजातिकी बेटी भी तो नहीं हो।"

स्त्री बोली, "आप बड़े सज्जन हैं। अिसीसे आप अैसा कह रहे हैं। पर मेरे पतिने ही कौन-सी बुराअी की थी ? अपने

जातिवालोंकी लाज रख लेना और दीन-दुखियोंपर दया करना, यही तो बड़ाओी है। निरे धन ही के रहनेसे कोओी बड़ा आदमी नही कहाता। धनकी शोभा दया ही से है न। मैं आपसे सच कहती हूँ, मेरे पतिका कुछ भी दोष नहीं है। दोष है तो मेरे भाग्यका है। मेरे ही लिये अनकी भी अितनी दुर्गति हो रही है।"

आँगनसे बालक बोला, "खबरदार, बचे रहो! अिसे सुनकर वह भद्र पुरुष हँसने लगा। अुसको अुस समय कोओी अच्छी तरह देखता तो जान जाता, अैसी हँसी वृद्धने बहुत दिनों तक नहीं हँसी थी। बालक हिल हिलकर और दोनों हाथोंको अूपर अुठाकर घुड़दोड़का आनन्द ले रहाथा। परन्तु वृद्धके सुखे-साखे कलेजेपर भी अुस पवित्र आनन्दके छीटें जा जाकर पड़ रहे थे।"

वृद्धने प्रेममें डूबकर पूछा, "अिसका नाम क्या है?"

स्त्री बोली, "रणवीरसिंह। और यह बेटी है। अिसका नाम सावित्री है।"

"तुम्हारे पति कब आवेंगे?"

"अुनके आनेका तो समय हो गया है। अब आते ही होंगे। किसी अपरिचित मनुष्यसे आज तक मैं अितना नहीं बोली थी। पर क्या करूँ, घरमें और कोओी है ही नहीं। आप अैसे दयालू है, मैं आपको अपने पिताके समान समझती हूँ। मेरा अपराध क्षमा कीजियेगा।"

"नहीं, नहीं; कुछ डरकी बात नहीं है। तुम्हारे पति क्या काम करते हैं? हो सके तो मैं अुनके लिये कुछ…"

" अजी, आप अितनी दया करें तो हमारे सब दुःख कट जावें।" यों कह वह भूमिपर माथा टेककर वृद्धको प्रणाम करने लगी। वह फिर बोली, " हमलोग जन्मभर आपके गुण मानेंगे। वह सब कामोमें कुशल हैं। पहले कअी दफ्तरोंमें नौकरी कर चुके हैं। अच्छी तनख्वाह भी पा चुके हैं। पर आजकल कअी महीनोंसे हमारे दिन बहुत ही बुरे आये हैं। दिन भर अुनको घूमते ही जाता है, पर कहीं कुछ ठिकाना नहीं लगता। देखिये, विवाहके पहले अुन्होंने कभी मेहनत नहीं की थी। न वे समझते थे कि पेट पालनेके लिये अितना दुःख झेलना पड़ेगा पर अब..........."

" और अुस बुड्ढे राक्षसने अपने अिकलौते बेटेको और अैसी लक्ष्मी-सी बहूको घरसे निकालकर कभी तुम लोगोंका नाम तक नहीं लिया। वह दोनों बेर ठूँस-ठूँसकर षट्रस भोजन करता है, और अुसका बेटा अेक टुकड़े रोटीके लिये दफ्तर दफ्तर भीख माँगता फिरता है!"

" दोष किसीका भी कुछ नहीं। सब मेरे ही खोटे भाग्योंका फल है। बीस रुपये महीनेकी भी कोअी नौकरी अुनको मिल जाती तो.........."

" बीस रुपये महीनेकी ?"

" जी हाँ, बीसको मैं बीस लाख समझती हूँ। मेरे पिताको दो सौ रुपये महीने मिला करते थे। हम आठ भाअी-बहिन थे। वे सब-के-सब सुखसे चले गये। अकेली मैं अितना दुखड़ा भोगनेके लिये बच गयी हूँ।"

"आः! हे भगवान्!"

ये दोनों अिस भाँति बातचीत कर रहे थे कि अितनेमें बाहरसे किवाड़ खटखटानेका शब्द सुन पड़ा। "मेरे पति आ गये।" कहकर वह स्त्री किवाड़ खोलने गयी। अुसने अपने पतिसे वृद्‌ध भद्र पुरुषके आनेकी बात कही; परन्तु अुस दिन अुसका पति अपने दुःखमें अितना डूबा हुआ था कि अपनी स्त्रीकी बात अनसुनी करके फूट फूटकर रोने लगा और वहीं बाहर पौरीमें धरतीपर गिरकर रो रोकर कहने लगा, "हे भगवन्! तेरे जीमें अभी और क्या है? अरे, तीन महीनेका किराया चढ़ गया है। आज देखो, मकानवाले अपने वकीलसे मकान छोड़ देनेके लिये नोटिस भिजवायी है। हाय, अब मेरे बच्चे गली गली भीख माँगते फिरेंगे"

अुसके मनका आवेग अितना बढ़ गया था कि घरमें आये हुअे अेक अपरिचित मनुष्यकी ओर अुसकी दृष्टि नहीं गयी। अपने ही दुःखकी तरंगमें वह डुबकियाँ मारने लगा। परन्तु अवसर पाते ही स्त्रीने अुसको ढाढस दिलाकर कहा, 'क्यों रोते हो? देखो, घरमें कौन आये हुअे हैं! आपने तुम्हारी नौकरी लगा देनेकी हामी भरी है। अुठकर अुनसे तो बात करो'

स्त्रीकी बातें सुनकर अुसका पति अठकर भीतर चला, तो देखा कि अेक वृद्‌ध मनुष्य रूमालसे अपनी आँखें पोंछ रहा हैं। अुसे देखते ही वह बोल अुठा "अ, बाबूजी!"

घुड़सवार लड़का चिल्लाकर बोला "बाबूजी, हट जाओ, बचे रहो।"

वृद्ध भद्र पुरुषने सिर अुठाकर कहा, "संग्रामवीरसिंह! बेटा!"

संग्रामवीरसिंह दौड़कर वृद्धके चरणोंसे लिपट गया। अुसकी स्त्री ससुरको देखकर अपने शरीरको वस्त्रसे भली भाँति ढँकने और सटपटाने लगी। बालक चिल्लाने लगा—खबरदार! सामनेसे हट जाओ। बालिका सावित्री बेचारी क्या करती? वह अपने नन्हें नन्हें होठोंको फुलाकर माताके सिरके केश नोचने लगी।

जब थोड़ी देर पीछे सब लोग कुछ शान्त हुअे, वृद्धने अेक लम्बी साँस भरकर कहा, "रणवीरसिंहके अिस जंगी घोड़े ही ने फिर तुमसे मुझको मिला दिया है। तुम जानते हो, अिस तरहका अेक घोड़ा मैंने तुम्हारे चढ़नेके लिये लड़कपनमें बनवा दिया था और अुसके माथे पर भी ठीक अिसी तरह दो तलवारें बनी हुअी थीं। वह घोड़ा अब तक घरपर रखा है। अुसे देख-कर कभी कभी मैं तुम्हारी बात सोचा करता था। अिस घोड़ेकी बनावट अुस घोड़ेसे मिलती-जुलती देखकर मुझे बड़ा विस्मय हुआ; क्योंकि अिस नमूनेका घोड़ा बाज़ारमें मिलना कठिन है। पर जब माथेपर दोनों तरवारें ठीक अुसी तरह अेक दूसरी पर चढ़ी हुअी देख पड़ीं तब तो मैंने जान लिया कि हो न हो अिससे तुम्हारा कुछ सम्बन्ध अवश्य होगा। सो भगवानकी दयासे मेरा अनुमान ठीक ही निकला। अच्छा बेटा, उस समय क्रोधमें आकर मैंने कुछ कह डाला तो क्या अुसी बातपर अड़े रहकर और अितना दुःख झेलकर तुमने कुछ अच्छा किया? भला अितने दिन हो गये, तुमने खबर तक न ली कि बुड्ढा है कि मर गया!"

अस्तु, पिता-पुत्रमें अकस्मात् फिर अिस भाँति मेल हो गया। तब वृद्धने अपनी पुत्र वधूको लजाती हुअी देखकर कहा, "बेटी, मुझे देखकर अितनी लाज करनेका कुछ प्रयोजन नहीं है। अेक बार अपने बहादुर रणवीरसिंहको तो ले आओ, अुससे भी भेंट-परिचय हो जाना चाहिये न ?"

रणवीरसिंह बहुत देर तक रण-यात्रा कर चुका था। माताके बुलाते ही दौड़ आया। अुसने सवेरेसे अब तक कुछ भी नहीं खाया था। अिसलिये सोचा, माता कुछ खानेको देगी। परन्तु जब वृद्धने अुसके दोनों हाथोंको पकड़ लिया, वह बड़े आग्रहसे अुनके मुखपर दृष्टि गड़ाकर देखता रहा, और फिर बोला, "मेरा घोड़ा छीनकर तो नहीं जाओगे ?"

वृद्धने हँसकर कहा, "नहीं जी, नहीं। अिसी तरहका अेक और घोड़ा, अिसी घोड़ेका बाप मेरे घरपर है। वहाँ चलोगे तो वह, तुम्हारा ही हो जावेगा।"

रन्नूने पूछा, "क्या वह तुम्हारा घोड़ा है ? तुम अुसपर चढ़ा करते हो ?"

वृद्धने फिर हँसकर कहा, "मैं तो नहीं, पर जब तुम्हारे बाबूजी तुम्हारे बराबर थे, तब वह अुसकी पीठपर चढ़ा करते थे।"

रन्नूने घूमकर अपने पिताकी ओर देखा। वह सोचने लगा मैंने तो कभी बाबूजीको आज तक छोटा-सा नहीं देखा। अुसे अपने पितामहकी बातोंपर विश्वास न हुआ।

तब समरवीरसिंहने अपनी पतोहूसे पूछा, "बेटी, अपना सब असबाब बाँधने-छाँदनेमें तुमको कितनी देर लगेगी ?"

अुनकी पुत्र-वधूने कुछ अचरजसे कहा, "असबाब बाँधनेमें ?"

"हाँ, अब यहाँसे जितनी जल्दी हो सके, चल देना चाहिये। विजयपुरके मकानमें आज १८ वर्षसे कोअी गृहलक्ष्मी नहीं है। वहाँ चलकर सब सँवारते-धरते कुछ दिनों तक तनिक भी छुट्टी नहीं मिलेगी। मैं सोच रहा हूँ कि अितने दिनों बाद मेरे गृहमें फिर लक्ष्मीकी मूर्ति आकर बिराजेगी।"

पतोहू सुनकर संकुचकर चुप हो रही। फिर बोली, "यहाँ है ही क्या ? सब तो पेटमें भर लिया है। दो चार थाली-लोटे और फटे-पुराने कपड़े रह गये हैं, कहिये अिनको ले चलूँ ?"

निदान दूसरे-दिन सवेरे ही द्वारपर अेक गाड़ी आकर लगी। समरवीरसिंह अपने पुत्र और पौत्रादिकको लेकर गाड़ीमें जा बैठे। परन्तु रन्नूने गाड़ीके भीतर अपने घोड़ेको अपने साथ रखवानेके लिये बहुत अूधम मचाया। अुनके पिताने अुसे बहुत समझाया-बुझाया, तब अुसका घोड़ा गाड़ीकी छतपर चढ़कर चलने लगा। राहमें जहाँ कहीं गाड़ी पल-भरके लिये भी रुकती, वह गाड़ीमेंसे निकलकर घोड़ेका कुशल-समाचार आप जाकर ले आता।

विजयपुरका मकान बहुत बड़ा था। वहाँ पहुँचकर रन्नूको बड़ा अनकस लगने लगा। परन्तु जब तक पचीस वर्षके गर्दसे लदा हुआ घोड़ेका बाप किसी पुराने गोदाममेंसे निकाला जाकर अुसके सामने न लाया गया अुसने अपने दादाके नाकों दम कर दिया।

वह थोड़ी देर तक बड़े ध्यानसे अुस घोड़ेको देखता रहा। फिर अपने घोड़ेको पीठ ठोंककर बोला, "मेरा घोड़ा ही अच्छा है। अिसके बापको मैं नहीं लेता।"

वृद्धने कहा, "ठीक है रणवीरजी! अपने पुराने मित्रोंको कभी न छोड़ना।"

विजयपुरका बड़ा भवन तब से फिर कभी सूना नहीं रहा है।

बफ़ाती चाचा

सन् १९२१। गाँधीजीके दिन। सावनकी शाम। घटा घुमड़ी हुअी थी। झींसें पड़ रहे थे। अिलाहाबादके अेक होटलके सामने तीन-चार खद्दरपोश व्यक्ति मोटरसे अुतरे। वे अुस सुहावनी बरसातमें होटलमें चाय पीना चाहते थे।

घटा घिरी हो, झीस पड़ती हों, पूर्वी हवा चलती हो, तब चाय बड़ी मजेदार लगती है। अिसका अनुभव चाय पीनेवालोंको खूब होता है।

चारों मित्र होटलके अन्दर जाकर अेक टेबिलपर बैठ गये।

अेकने मैनेजरको चाय लानेको कहा। फिर वे बातें करने लगे।

चारोंकी अुम्र २० और ४० के अन्दर थी। चारों शिक्षित थे, जो अुनके अंग-संचालन पोषाक और बातचीतसे प्रकट हो रहा था।

अेक, जो अुम्रमें सबसे छोटा था, और जिसकी बातचीतसे मालूम होता था कि होटलमें आनेसे पहले वह किसी गम्भीर चर्चामें अपना मस्तिष्क गरम कर चुका है, अुत्तेजित होकर कहने लगा, "मैं अिस बातको नहीं मानता कि हिन्दू-मुसलमानोंमें कभी मेल हो ही नहीं सकता।"

दूसरेने कहा, "गाँधीजी जैसा मेल करानेवाले महात्मा यदि सफल न हुआ तो मेल होना असंभव ही है।"

तीसरेने कहा, "हिन्दू-मुसलमानोंका विरोध शहरों ही में है। देहातमें दोनों भाअी भाअीकी तरह मिलकर रहते हैं।"

अेक समर्थक पाकर पहला युवक अधिक अुत्साहसे कहने लगा, "आप सच कहते हैं। देहातमें अभी तक विरोधकी बातें पहुँची ही नहीं। हाँ, हिन्दू-मुसलमानोंके मेलके सौदेने वहाँ भी विरोधकी आग पैदा कर दी है।"

चौथा व्यक्ति, जो शहर ही का निवासी जान पड़ता था, और अवस्थामें भी अुन तीनोंसे बड़ा था, हँसकर कहने लगा, "वाह, मेलकी बातसे अुलटे विरोध!"

युवकने चेहरे पर पूरा जोर लाकर कहा, "हाँ, मेलके सौदे ही ने विरोध अुत्पन्न किया है। मैं देहातका रहनेवाला हूँ। मैं देहातकी दशाको अच्छी तरह जानकार हूँ। दस बरस पहले देहातमें हिन्दू-मुसलमानोंमें जैसा मेल था, वैसा मेल यदि आज दाम देकर मिले, तो सारा हिन्दुस्तान देकर भी मैं अुसे ले लेनेको

तैयार हूँ। फिर भी वह हमें बहुत सस्ता पड़ेगा। क्योंकि हिन्दू-मुसलमानोंका वह मेल न जाने कितने नये हिन्दुस्तान बना लेगा।"

चाय आ चुकी थी और सब दो-चार घूँट ले भी चुके थे। युवककी बातोंका प्रभाव अुनपर अच्छा पड़ा। सबने चायका प्याला रख दिया और युवककी बातोंमें तन्मय-से होते जान पड़ने लगे। हिन्दुस्तानके मूल्यपर हिन्दू-मुसलमानका मेल खरीदना क्या कोअी साधारण बात थी!

शहरके अधेड़ पुरुषने कहा, "तुम कवियोंकी-सी बातें करते हो। मैं अितिहासकी सत्यताको प्रामाणिक मानता हूँ। हिन्दू-मुसलमानोंमें अैतिहासिक अंतर है। नमें कभी अंतस्तलकी अकता हो ही नहीं सकती।"

युवकने अपने कथनकी सच्चाअीपर दृढ निश्चयीकी भाँति कुछ मुसकराते हुअे कहा, "महाशय! मैं विश्वास करता हूँ कि अक अुदाहरण आपके विचारको बदलनेके लिये काफ़ी होगा। मैं आपको अपने अूपर बीती अक बात, सुनाना चाहता हूँ।"

यह कहकर अुसने अन्य दो मित्रोंकी तरफ़ दृष्टि की, और जब अुसने देखा कि वे तीनों अुसकी बातोंमें रस लेनेको अुत्सुक हैं, तब अुसने कहना शुरू किया—

"मैं अक गाँवका रहनेवाला हूँ। अक किसानका लड़का हूँ। मेरे पिता संस्कृतके पंडित थे, पर किसानी करते थे। मेरे मुहल्लेमें बफ़ाती मियाँ नामके अक जुलाहे थे। थे तो वे जुलाहे, पर

जुलाहेका पेशा न करके किसानी करते थे। अुनके और मेरे पिताके खेत पास पास थे। अिससे हम लोगोंका अुनसे रात-दिनका संसर्ग था।

"लड़कपनमें हम लोग बफ़ाती मियाको बफ़ाती चाचा कहा करते थे। बफ़ाती चाचा हम लोगोंको अपने बच्चोंसे कम प्यार नहीं करते थे। पर वे सदा अिस बातका ध्यान रखते थे कि कहीं अुनसे हमारे खाने-पीनेकी चीज़ें छू न जायँ।

"खेत पास पास होनेसे कभी मेरे पिता और कभी बफ़ाती मियाँ खेतकी रखवाली कर लिया करते थे। मक्केके खेतकी रखवालीके दिनोंमें हम लोग जब बड़े सबेरे अुठकर फूट और ककड़ीके लिये खेतमें जाते तब मेंड ही परसे चिल्लाते—बफ़ाती चाचा, सोते हो कि जागते?

"बफ़ाती चाचा माचेपरसे और कभी कभी खेतके अन्दरसे बोलते—'आओ बेटा! आज बड़े अच्छे अच्छे फूट निकले हैं।'

"वे अच्छे अच्छे फूट चुनकर हाथमें लिये हुये मेरे पास आते और मुझे दे देते। अपने बच्चोंको वे मामुली फूट देते थे।

"मेरे खेतसे जो फूट आते, अुनमेंसे कुछ अच्छे अच्छे चुनकर मेरे पिताजी बफ़ाती चाचाके घर भिजवा दिया करते थे। अिस तरह अेक हिन्दू पंडित और अेक मुसलमान जुलाहेकी मैत्री मधुरताके वातावरणमें फूलती-फलती रहती थी। हम लोग कभी स्मरण ही नहीं करते थे कि हम हिन्दू हैं और बफ़ाती चाचा मुसलमान हैं, और हम दोनोंकी दुनिया दो है।

"मैं अपने चार भाअियोंमें सबसे छोटा था। बफ़ाती चाचा मुझे बहुत प्यार करते थे। आमके दिनोंमें बागमें ज़ब पहली सीकर (कोयल या टपका) अुन्हें मिलती तब वे अुसे अँगोछेके कोनेमें बाँधे आते और मै मुहल्लेमें कहीं खेलता होता तो ढूँढ़कर मुझे देते। मैं अुसे सूँघकर कहता—आहा! बफ़ाती चाचा, तुम बहुत मीठे हो।

"वे गुड़ बहुत खाते थे, और मिठा बोलते भी थे। अिससे हम लोग अुन्हें मीठा कहकर चिढ़ाया करते थे। वे झुँझलाते हुअे पकड़ने दौड़ते, पर कौन हाथ आता?

"बफ़ाती चाचा कभी कभी शामको अपनी रोटियाँ रकाबीमें लिये हुअे मेरे यहां चले आते, बाहर बैठ जाते, पुकारकर कहते—बच्चा! देखो तो घरमें कोअी शाक-तरकारी बनी है? आज मेरे घर में अभी दाल पकी ही नहीं।

"मैं घरमें जाता, माँसे बफ़ाती चाचाके लिये दाल, तरकारी भात कुछ चटनी और अचार माँग लाता। बफ़ाती चाचा बड़े प्रेमसे खाते, वे खा भी न चुकते कि मैं माँसे अुनके लिये दाल-तरकारी फिर माँग लाता! वे रोकते ही रहते, पर मैं अुनकी रकाबीमें अुड़ले बिना न मानता। तब मैं देखता कि बफ़ाती चाचाकी आँखोंमें स्नेहके आँसु भर आते। अुनका जी अवश्य चाहता रहा होगा कि मुझे छातीसे चिपका लेते। पर मैं अेक पंडितका लड़का था, अिससे अपना स्नेह वे आँसुओं ही में भरकर प्रकट कर सकते थे।

"फसलकी सबसे पहली चीज़ वे मेरे लिये लाते। कटहल आम, जामुन, कोअी भी चीज़ होती, पहले वे मेरे घर लाकर देते; फिर मेरे घरसे वह अुनके बच्चोंके लिये जाती।

"हमने कभी समझा ही नहीं कि हम दो हैं। यद्यपि हम रहन-सहन और धार्मिक मतभेदसे दो थे।

"अिस तरह कअी बरस बीत गये। मैं भी बचपनकी सीमासे बाहर आ गया। मेरे पिताजीका भी देहान्त हो गया। गृहस्थीका सारा बोझ मेरे बड़े भाअीके कंधोंपर आ पड़ा। बफ़ाती मियाँ अब और भी तत्परतासे अपना चाचापन निभाने लगे। मेरे बड़े भाअी गृहस्थीके प्रायः सभी मामलोंमें अुनकी सलाह लिया करते थे।

"अहीरका अेक लड़का महल्लेके गोरू चराया करता था। और भी कअी गाँवोंके गोरू अेक साथ चरा करते थे। अेक दिन चरवाहोंकी लापरवाहीसे कअी गोरू कब्रस्तानमें जा घुसे और कुछ नये पौधोंको, जिन्हें मुसलमानोंने कब्रोंपर छाया और लकड़ीके लिये लगाया था, नोच डाला। मुसलमान ख़बर पाकर दौड़े आये अुन्होंने चरवाहोंको पकड़कर मारा-पीटा भी और अुनके सब गोरूओंको भी वे पौंडकी तरफ हाँककर ले चले।

"चरवाहोंने अपने अपने गाँवोंमें दौड़कर ख़बर दी। अुस झुण्डमें जिन जिनके गोरू थे, वे सब बातकी-बातमें जमा हो आये। गाँवके बाहर हिन्दू-मुसलमानोंकी अेक बड़ी भीड़ गोरूओंको घेरकर खड़ी हो गयी। हिन्दू-मुसलमानका झगड़ा होनेवाला है, यह समाचार जंगलकीआगकी तरह चारों ओर

फैला गया। अिससे वहाँ बहुत-से अैसे हिन्दू-मुसलमान भी जमा हो आये जिनका अुस झगड़ेसे कुछ भी ताल्लुक न था।

"गोरूओंको छोड़ देनेके लिये बहुत कुछ कहा-सुना गया पर अुन चरवाहोंकी यह लापरवाही पहली ही न थी, अिससे मुसलमान राजी न हुअे।

"अब दोनों ओरके लोग ललकारने लगे। धमकियाँ दी जाने लगीं। गालियाँ भी शुरू हो गयीं। लोग दौड़ दौड़कर लाठियाँ ले आये। चरवाहोंके गाँववाले भी लाठियाँ लेकर आ गये।

"अेक ही दो कड़ी बातोंके बाद दोनों ओरका नियंत्रण जाता रहता और दोनों तरफ़से दस-बीस आदमी घायल हो जाते और आश्चर्य नहीं कि दो-अेक मर भी जाते। यह परिणाम दस ही मिनटकी दूरीपर सदेह होनेकी राह देख रहा था।

"बफ़ाती चाचा भी अपने बेटे-पोतोंके साथ मुसलमानोंकी तरफसे गये थे। वे लड़ाअी तो नहीं चाहते थे, पर अुन अकेलेकी सुनता कौन था? लीडर तो वे लोग थे, जिनके मुँहमें बुरीसे बुरी और चुभनेवाली गालियाँ और टेंटमें रुपये थे।

"गाँवके बाहर बड़ा हल्ला मचा हुआ था। लोग तमाशा देखनेके लिये अुसी तरफ दौड़े चले जा रहे थे। मेरे घरके गोरू भी बेढ़े गये थे। खबर पाकर मेरे सभी भाअी वहाँ जा पहुँचे थे। सबके हाथोंमें लाठियाँ थीं। घरकी स्त्रियाँ सशंकित मुख-मुद्रासे हल्लेकी सीधमें आँखे लगाये खड़ी थीं। सबके होश अुड़े हुअे थे। आज न जाने कौन घायल होगा और कौन मारा जायेगा।

" शामका वक्त था। मैं मदरसेमें पढ़ने गया था। छुट्टी हुअी और मैं घरकी तरफ भागा। घर आकर देखा तो पुरुष तो महल्लेमें अेक भी नहीं रह गये थे। स्त्रियाँ भयभीत खड़ी थीं। लड़कपनके दिन हल्ला-गुल्ला, धूम-धड़क्का खूब रुचता था। किताबोंका बस्ता घरके अंदर फेंककर मैं हल्लेकी सीधमें भाग निकला। माँ रोकती रही—चिल्लाती रही; पर कौतूहलकी डोरी मुझे अुस हल्ले तक खींच ही ले गयी।

"मैं भीडमें घुसकर अपने भाअियोंके पास जा खडा हुआ। सामने मुसलमानोंकी तरफ बफ़ाती चाचा आगे खड़े थे। खूब गरमा-गरमी हो रही थी। दोनों तरफ़ बड़ा जोर था। हाथ छूटने ही वाले थे।

" गाँवके लड़के मार-पीटको अुतना भयानक नहीं समझते, जितना शहरके लडके समझते हैं। लाठी चलना देखनेका शौक मुझे खूब था।

" मैंने पहुँचते ही पूछा, "बफ़ाती चाचा ! तुम किधर'?"

"मेरी आवाज़ पहचानकर बफ़ाती चाचाने मेरी ओर देखा। तात्काल ही वे अपने बड़े लडकेके हाथसे लाठी छीनकर मेरे सामने आकर खड़े हो गये और अपने बेटोंसे कहने लगे, ' अिनका बाप अब नहीं है। अिसलिये मैं अिनकी तरफसे लड़ूँगा, तुम अुधरसे लड़ो। "

" बफ़ाती चाचाके अिस कथनने जादूका अैसा असर डाला कि दोनों दलोंके लोग अेक बार तो ठक-से हो गये। हल्ला-गुल्ला शांत हो गया। क्षण ही भर बाद सब मुसलमान शिस झुकाये

हुअे चुपचाप गाँवकी तरफ चले गये और हिंदू भी। हम लोग बफ़ाती चाचाको आगे करके अपने घर लौट आये।

"मैं अुस समय तो समझ न सका कि अितना गरम झगड़ा अेकाअेक ठंड़ा कैसा हो गया। पर आज समझता हूँ।"

युवकने अपने मित्रोंको अेक दूसरी ही दुनियामें पहुँचा दिया था, जहाँ केवल मनुष्य रहते हैं; न कोअी हिन्दू, न कोअी मुसलमान। अुसने जेबसे रूमाल निकालकर अपनी आँख पोछीं और भरे हुअे गलेसे फिर कहना शुरू किया—

"बफ़ाती चाचाको मरे कअी बरस हो गये। वे जिस कब्रमें गाड़े गये हैं, अुसे मैं अब भी पहचानता हूँ। कब्रस्तानके पास ही नाला है। जब सबेरे-शाम हम लोग नालेकी तरफ जाते हैं, तब कब्रके पास होकर जाते समय बच्चोंकी तरह भोले-पनसे पुकार लेते हैं—'बफ़ाती चाचा! सोते हो कि जागते'? यह विश्वास ही नहीं होता कि बफ़ाती चाचा मर गये हैं।"

अिसके बाद बफ़ाती चाचाकी स्मृतिमें युवकका कंठ-स्वर डूब गया।

चाय ठंडी हो गयी थी और होटलका बिल चुकता किया जा चुका था। वे चारों मित्र मुँहसे अेक शब्द निकाले बिन ही अुठकर होटलसे बाहर हो गये।

अब्बू खाँकी बकरी

हिमालय पहाड़का नाम तो तुमने सुना ही होगा। अिससे बड़ा पहाड़ दुनियामें कोअी नहीं है। हजारों मील फैलता चला गया है। और अूँचा अितना है कि अभी तक अिसकी अूँची चोटियोंपर कोअी आदमी नहीं पहुँच पाया। अिस पहाड़के अन्दर बहुत-सी बस्तियाँ भी बसी हैं। अैसी ही अेक बस्ती अलमोड़ा भी है।

अलमोड़ेमें अेक बड़े मियाँ रहते थे। अुनका नाम था अब्बू खाँ। अुन्हें बकरियाँ पालनेका बहुत शौक था। अकेले आदमी थे, बस अेक-दो बकरियाँ रखते, दिन-भर अुन्हें चराते फिरते, अुनके अजीब अजीब नाम रखते—किसीका कल्लू, किसीका मुँगिया, किसीका गुजरी, किसीका हुकमा। अिनसे न जाने क्या बातें करते रहते और शामके वक्त बकरियोंको लाकर घरमें बाँध देते। अलमोड़ा पहाड़ी जगह है। अिसीलिये अब्बू खाँकी बकरियाँ भी पहाड़ी नस्लकी होती थीं।

अब्बू खाँ गरीब थे, बड़े बदनसीब। अुनकी सारी बकरियाँ कभी-न-कभी रस्सी तुड़ाकर रातको भाग जाती थीं। पहाड़ी बकरी बँधे बँधे घबड़ा जाती है। ये बकरियाँ भागकर पहाड़में चली जाती थीं। वहीं अेक भेड़िया रहता था। वह अुन्हें खा जाता था। मगर अजीब बात है, न अब्बू खाँका प्यार, न शामके दानेका लालच और न भेड़ियेका डर अुन बकरियोंको भागनेसे रोकता था। अिसकी वजह शायद यह हो कि पहाड़ी जानवरोंके

मिज़ाजमें आज़ादीकी बहुत मुहब्बत होती है। यह अपनी आज़ादी किन्हीं दामों देनेको राजी नहीं होते और मुसीबत-खतरोंको सहकर भी आज़ाद रहनेको आराम और आनन्दकी क़ैदसे अच्छा जानते हैं।

जहाँ कोअी बकरी भाग निकली, अब्बू खाँ बेचारे सिर पकड़कर बैठ गये। अुनकी समझमें ही न आता था कि हरी हरी घास मैं अुन्हें खिलाता हूँ, छिपा छिपाकर पड़ोसियोंके धानके खेतमें मैं अुन्हें छोड़ देता हूँ, शामको दाना देता हूँ, मगर यह कम्बख्त नहीं ठहरतीं और पहाड़में जाकर भेड़ियेको अपना खून पिलाना पसन्द करती हैं।

जब अब्बू खाँकी बहुत-सी बकरियाँ यों भाग गयीं, तो बेचारे बहुत अुदास हुअे और कहने लगे—"अब बकरी न पालूँगा ज़िन्दगीके थोड़े दिन और हैं, बे-बकरियों ही के कट जायँगे। मगर तनहाअी बुरी चीज़ है। थोड़े दिन तो अब्बू खाँ बे-बक-रियोंके रहे। फिर न रहा गया। अेक दिन कहींसे अेक बकरी खरीद लाये। यह बकरी अभी छोटी ही थी, कोअी साल-सवा सालकी होगी। पहली दफ़ा ब्यायी थी। अब्बू खाँने सोचा कि कम-अुम्र बकरी लूँगा, तो शायद हिल जाय। और अुसे जब पहले ही से अच्छे अच्छे चारे-दानेकी आदत पड़ जायगी, तो फिर वह पहाड़का रुख न करेगी।

यह बकरी थी बहुत खूबसूरत, रंग अिसका बिलकुल सफ़ेद था। बाल लम्बे लम्बे थे, छोटे छोटे, काले सींग अैसे मालूम

होते थे कि किसीने आबनूसकी काली लकड़ीमें खूब मेहनतसे तराशकर बनाये हैं। लाल लाल आँखें तुम देखते तो कहते कि अरे, यह बकरी हमने ली होती! यह बकरी देखने ही में अच्छी न थी, मिज़ाजकी भी बहुत अच्छी थी। प्यारसे अब्बू खाँके हाथ चाटती थी। दुध चाहे तो कोओी बच्चा दुह ले, न लात मारती, न दूधका बरतन गिराती। अब्बू खाँ तो बस अिसपर आशिक़-से हो गये थे। अिसका नाम चाँद्नी रखा था और दिन-भर अिससे बातें करते रहते थे। कभी कभी चचा घसीटा खाँका किस्सा अिसे सुनाते थे, कभी मामू नत्थूका।

अब्बू खाँने यह सोचकर कि बकरियाँ शायद मेरे तंग आँगनमें घबड़ा जाती हैं, अपनी अुस बकरी चाँद्नीके लिये नया अिन्तजाम किया था। घरके बाहर अुनका अेक छोटा-सा खेत था। अुसके चारों तरफ अुन्होंने न जाने कहाँ कहाँसे काँटे जमा करके डाले थे कि कोओी अुसमें न आ सके। अुसके बीचमें चाँद्नीको बाँधते थे और रस्सी खूब लम्बी रखी थी कि खूब अिधर-अुधर घूम सके। अिस तरह चाँद्नीको अब्बू खाँके यहाँ खासा ज़माना गुज़र गया। और अब्बू खाँको यक़ीन हो गया कि आखिरको अेक बकरी तो हिल गयी, अब यह न भागेगी।

मगर अब्बू खाँ धोखेमें थे। आज़ादीकी ख्वाहिश अितनी आसानीसे दिलसे नहीं मिटती। पहाड़ और जंगलमें रहनेवाले आज़ाद जानवरोंका दम घरकी चहारदीवारीमें घुटता है, तो काँटोंसे घिरे हुअे खेतमें भी अुन्हें चैन नसीब नहीं होता। क़ैद, क़ैद सब अेक-सी। थोड़े दिनके लिये चाहे ध्यान बैठ जाय,

मगर फिर पहाड़ और जंगल याद आते हैं और क़ैदी अपनी रस्सी छुड़ानेकी फ़िक्र करता है। अब्बू खाँका ख़याल ठीक न था, कि चाँदनी पहाड़की हवा भूल गयी है।

अेक दिन सुबह सुबह जब सूरज अभी पहाड़के पीछे ही था कि चाँदनीने पहाड़की तरफ़ नज़र की। मुँह जो जुगालीकी वजहसे चल रहा था, रुक गया और चाँदनीने दिलमें कहा— " वह पहाड़की चोटियाँ कितनी खूबसूरत हैं, वहाँकी हवा और यहाँकी हवाका क्या मुक़ाबिला ? फिर वहाँ अुछलना, कूदना, ठोकरें खाना, और यहाँ हर वक्त बँधे रहना। गर्दनमें आठ पहर यह कम्बक्त रस्सी। अैसे घरोंमें गधे और खच्चर भले ही चुग लें। हम बकरियोंको तो ज़रा बड़ा मैदान चाहिये।"

अिस ख्यालका आना था और चाँदनी अब वह पहली चाँदनी ही न थी। न अुसे हरी हरी घास अच्छी लगती थी, न पानी मज़ा देता था। न अब्बू खाँकी लम्बी दास्तानें अुसे भाती थीं, रोज़-ब रोज़ दुबली होने लगी। दूध घटने लगा। हर वक्त मुँह पहाड़की तरफ़ रहता, रस्सीको खींचती और अजब दर्द-भरी आवाज़से 'मैं-मैं' चिल्लाती। अब्बू खाँ समझ गये, हो-न-हो कोअी बात ज़रूर हैं; लेकिन यह समझमें नहीं आता था कि क्या है। अेक दिन सुबह जब अब्बू खाँने दूध दुह लिया तो चाँदनीने अुनकी तरफ़ मुँह फेरा और अपनी बकरियोंवाली ज़बानमें कहा—" अब्बू खाँ मियाँ, मैं अब तुम्हारे पास रहूँगी तो मुझे बड़ी बीमारी हो जायेगी। मुझे तो तुम पहाड़ ही में चली जाने दो।"

अब्बू खाँ बकरियोंकी जबान समझने लगे थे। चिल्लाकर बोले— " या अल्लाह ! यह भी जानेको कहती है, यह भी! " हाथके थरथरानेसे मिट्टीकी लुटिया, जिसमें दुध दूहा था, हाथसे गिरी और चूर चूर हो गयी।

अब्बू खाँ वहीं घासपर बकरीके पास बैठ गये और निहायत गमगीन आवाज़से पूछा—" क्यों बेटी चाँदनी, तू भी मुझे छोड़ना चाहती है ? "

चाँदनीने जवाब दिया—" हाँ, अब्बू खाँ मियाँ, चाहती तो हूँ। "

" अरे, क्या तुझे चारा नहीं मिलता या दाना पसन्द नहीं ? बनियेने घुने मिला दिये हैं ? मैं आज ही और दाना ले आऊँगा। "

" नहीं नहीं मियाँ, दानेकी कोअी तकलीफ़ नहीं। " चाँदनीने जवाब दिया।

" तो फिर क्या रस्सी छोटी है ? मैं और लम्बी कर दूँगा।

चाँदनीने कहा—" अिससे क्या फ़ायदा ? "

" तो अखिर फिर क्या बात है, चाहती क्या है ? "
चाँदनीने जवाब दिया-" कुछ नहीं; बस मुझे तो पहाड़में जाने दो। "

अब्बू खाँने कहा"— अरी कम्बख्त, तुझे यह खबर है कि वहाँ भेड़िया रहता है। वह जब आयेगा, तो क्या करेगी ? "

चाँदनीने जवाब दिया—" अल्लाहने दो सींग दिये हैं, अुनसे अुसे मारूँगी। "

"हाँ हाँ, जरूर !"—अब्बू खाँ बोले—"भेड़ियेपर तेरे सिंगों ही का तो असर होगा ! वह तो मेरी कअी बकरियाँ हड़प कर चुका है। अुनके सींग तुझसे बहुत बड़े थे। तू तो कल्लूको जानती नहीं थी, वह यहाँ पिछले साल थी। बकरी काहेको थी, हिरन थी हिरन ! काला हिरन !! रात-भर सींगोंसे भेड़ियेके साथ लड़ी, मगर फिर सुबह होते होते अुसने दबोच ही लिया और खा गया।"

चाँदनीने कहा—"अरे-रे- बेचारी कल्लू ! मगर खैर, अब्बू खाँ मियाँ, अिससे क्या होता है ? मुझे तो तुम पहाड़में जाने ही दो।"

अब्बू खाँ कुछ झुँझलाये और बोले—"या अल्लाह, यह भी जाती है। मेरी ऐक बकरी और अुस कम्बख्त भेड़ियेके पेटमें जाय। नहीं, मैं अिसे तो जरूर बचाअूँगा। कम्बख्त अहसान-फरामोश, तेरी मर्जीके खिलाफ़ तुझे बचाअूँगा। अब तो तेरा अिरादा मालूम हो गया है। अच्छा, बस चल, तुझे कोठरीमें बाँधा करूँगा। नहीं तो मौका पाकर चल देगी।"

अब्बू खाँने आकर चाँदनीको अेक कोनेकी कोठरीमें बन्द कर दिया और अूपरसे जंजीर चढ़ा दी; मगर गुस्से और झुँझलाहटमें कोठेकी खिड़की बन्द करना भूल गये। अिधर अिन्होंने कुंडी चढ़ायी, अुधर चाँदनी खिड़कीमेंसे अुचककर बाहर ! यह जा, वह जा !

चाँदनी पहाड़पर पहुँची, तो अुसकी खुशीका क्या पूछना ? पहाड़पर पेड़ अुसने पहले भी देखे थे, लेकिन आज अुनका और ही रंग था। अुसे अैसा मालूम होता था कि सब-के-सब खड़े हुअे अुसे मुबारकबाद दे रहे हैं कि फिर हममें आ मिली।

अिधर-अुधर सेवतीके फूल मारे खुशीसे खिलखिलाकर हँस रहे थे, कहीं अूँची अूँची घास अुससे गले मिल रही थी। मालूम होता था कि सारा पहाड़ मारे खुशीके मुसकरा रहा है और अपनी बिछुड़ी हुअी बच्चीके वापस आनेपर फूला नहीं समाता। चाँदनीकी खुशीका हाल कोअी क्या बताये—न चारों तरफ़ काँटोंका बाढ़, न खूँटा, न रस्सी। और चारा—वह जड़ी-बूटियाँ, कि अब्बू खाँ गरीब अपनी सारी मुहब्बत और स्नेहके होते हुअे न ला सकते!

चाँदनी कभी अिधर अुछलती, कभी अुधर, यहाँसे कूदी, वहाँ फाँदी। कभी चट्टानपर है, कभीखड्डेमें। अिधर जरा फिसली, फिर सँभली। अेक चाँदनीके आनेसे सारे पहाड़में रौनक-सी आ गयी थी। अैसा मालुम होता था कि अब्बू खाँकी दस-बारह बकरियाँ छूटकर यहाँ आ गयी हैं।

अेक दफ़ा घासपर मुँह मारकर जो जरा सिर अुठाया तो चाँदनी की नजर अब्बू खाँके मकान और अुस काँटोंवाले घेरेपर पड़ी। अुन्हें देखकर खूब हँसी और दिलमें कहने लगी—"या खुदा, कोअी देखे तो कितना जरा-सा मकान है और कैसा छोटा-सा घर! या अल्लाह, मैं अितने दिन अुसमें कैसे रही? अुसमें आखिर समाती कैसे थी—पहाड़की चोटीपरसे अुस नन्हीं-सी जानको नीचे सारी दुनिया हेच नज़र आती थी।

चाँदनीके लिये यह दिन भी अजीब था। दोपहर तक अितनी अुछली-कूदी कि शायद सारी अुम्रमें अितनी अुछली-कूदी न होगी। दोपहर ढले अुसे पहाड़ी बकरियोंका अेक गल्ला दिखाअी दिया। गल्लेकी बकरियोंने अुसे खुशी खुशी अपने पास बुलाया और अुससे हाल-अहवाल पूछा। गल्लेमें कुछ जवान बकरे

भी थे। अुन्होंने भी चाँदनीकी बड़ी खातिर तवाज़ा की। अुसमें अेक बकरा था, ज़रा काले काले रंगका, जिसपर कुछ सफ़ेद ठप्पे थे। वह चाँदनीको भी अच्छा लगा और यह दोनों बहुत देर तक अिधर अुधर फिरते रहे। अुनमें न जाने क्या क्या बातें हुअीं। और कोअी था नहीं। अेक सोता पानीका बह रहा था। अुसने सुनी होगी। कभी कोअी वहाँ जाय और अुस सोतेसे पूछे, तो शायद कुछ पता लगे। और भी क्या खबर, वह सोता भी शायद न बताये।

खैर, बकरियोंका गल्ला तो न मालूम किधर चला गया। वह जवान बकरा भी अिधर-अुधर घूमकर अपने साथियोंमें जा मिला।

चाँदनीको अभी आज़ादीको अितनी ख्वाहिश थी कि अुसने गल्लेके साथ होकर अभीसे अपने अूपर पाबन्दियाँ लेना गवारा न किया और अेक तरफ चल दी। शामका वक्त हुआ। ठण्डी हवा चलने लगी। सारा पहाड़ लाल-सा हो गया और चाँदनीने सोचा—"ओ हो, अभीसे शाम!"

नीचे अब्बू खाँका घर और वह काँटोंवाला घेरा दोनों कुहरेमें छिप गये। नीचे कोअी चरवाहा अपनी बकरियोंको बाड़में बन्द करने लिये जा रहा था। अुनकी गर्दनकी घंटियाँ बज रही थीं। चाँदनी अुस आवाज़को खूब पहचानती थी। अुसे सुनकर अुदाससी हो गयी। होते होते अँधेरा होने लगा और पहाड़में अेक तरफसे आवाज़ आयी—"खूँ-खूँ!"

यह आवाज़ सुनकर चाँदनीको भेड़ियेका ख्याल आया। दिनभर अेक दफ़ा भी अुसका ध्यान अुधर न गया था।

पहाड़के नीचेसे अेक सीटी और बिगुलकी आवाज़ आयी। यह बेचारे अब्बू ख़ाँ थे, जो आखिरी कोशिश कर रहे थे, कि अुसे सुनकर चाँदनी फिर लौट आवे। अिधरसे यह कह रहे थे— "लौट आ, लौट आ।" अुधरसे दुश्मन-जान भेड़ियेकी आवाज़ आ रही थी।

चाँदनीके जीमें कुछ तो आयी कि लौट चलें। लेकिन अुसे खूँटा याद आया; रस्सी याद आयी; काँटोंका घेरा याद आया। और अुसने सोचा कि अुस जिन्दगीसे यहाँकी मौत अच्छी। आखिरको सीटी और बिगुलकी आवाज़ बन्द हो गयी पीछेसे पत्तोंकी खड़खड़ाहट सुनायी दी। चाँदनीने मुड़कर देखा तो दो कान दिखाअी दिये, सीधे खड़े हुअे, और दो आँखें जो अँधेरेमें चमक रही थीं। भेड़िया पहुँच गया था।

भेड़िया ज़मीनपर बैठा था, नज़र बेचारी बकरीपर जमी थी। अिसे अित्मीनान था, जल्द न थी खूब जानता था कि अब कहाँ जाती है। बकरीने जो अिसकी तरफ़ रुख़ किया, तो यह मुसकराये और बोले—"ओह-ओ! अब्बू ख़ाँकी बकरी है। ख़ूब खिला खिलाकर मोटा किया है।" यह कहकर अुसने अपनी लाल लाल ज़बान अपने नीले नीले होठोंपर फेरी। चाँदनीको कल्लूका किस्सा याद आया, जो अब्बू ख़ाँने बताया था और अुसने सोचा कि मैं क्यों ख्वाहम-ख्वाह रात-भर लड़-कर सुबहको जान दूँ, अभी क्यों न अपनेको सुपुर्द कर दूँ? लेकिन फिर ख्याल किया कि नहीं। अपना सिर झुकाया, सींग आगेको किये और पैंतरा बदलकर भेड़ियेके मुकाबिले आयी कि बहादुरोंका यही स्वभाव है। कोअी यह न समझे कि चाँदनी अपनी बिसात न जानती थी, भेड़ियेकी ताक़तका

अन्दाज अुसे न था। वह खूब जानती थी कि बकरियाँ भेड़ियोंको नहीं मार सकती। वह तो सिर्फ़ यह चाहती थी कि अपनी बिसातके मुताबिक मुकाबिला कर ले। जीत-हारपर अपना काबू नहीं। वह अल्लाहके हाथ है, मुकाबिला ज़रूरी है। जीमें वह सोचती थी कि देखूँ, मैं कल्लूकी तरह रात-भर मुकाबिला कर सकती हूँ या नहीं।

कुछ देर जब गुज़र गयी तो भेड़िया बढ़ा। चाँदनीने भी सींग सँभाले और वह हमले किये कि भेड़ियेका ही जी जानता होगा। दसियों मरतबा अुसने भेड़ियेको पीछे रेल दिया। सारी रात अिसीमें गुज़री। कभी कभी चाँदनी अूपर आसमानकी तरफ़ देख लेती और सितारोंसे आँखों आँखोंसे कह देती— "अै! कहीं अिसी तरह सुबह हो जाय!"

सितारे अेक अेक करके ग़ायब हो गये। चाँदनीने आखिरी वक्तमें अपना ज़ोर दुगुना कर दिया! भेड़िया भी तंग आ गया था कि दूरसे अेक रोशनी-सी दिखायी दी। अेक मुर्ग़ेने कहींसे बाँग दी। नीचे बस्तीमें मस्जिदसे अज़ानकी आवाज़ आयी। चाँदनीने दिलमें कहा कि अल्लाह, तेरा शुक्र है। मैंने अपने बसभर मुकाबिला किया, अब तेरी मर्ज़ी! मुअज्जन आखिरी दफ़ा अल्लाह-हो-अकबर कह रहा था कि चाँदनी बेदम जमीनपर गिर पड़ी। अुसका सफ़ेद बालोंका लिबास खूनसे बिलकुल सुर्ख था। भेड़ियेने अुसे दबोच लिया और वह अुसे खा गया। दरख्तपर चिड़ियाँ बैठी देख रही थीं। अुनमें अिसपर बहस हो रही थी कि जीत किसकी हुअी? बहुत कहती हैं कि भेड़िया जीता। अेक बूढ़ी-सी चिड़िया है, वह कहती है— "चाँदनी जीती!"

जादूगर

माधवपुर नामक अेक नगर था। वहाँ कअी तरहके कारीगर बड़े आरामसे रहते थे। सब खुशहाल थे, किसी बातकी कमी न थी। दुःख, बीमारी, झगड़ा-फ़साद, अकालमृत्यु आदिका नामोनिशान नहीं था। विद्या, धन, नीरोगता आदि हीं का अुस नगरमें वास था। सबकी अच्छी आमदनी थी; अिसलिये अपनी आवश्यकताओंके लिये भी खूब खर्च करते थे और नगरके सार्वजनिक कामके लिये भी खूब रुपये देते थे। अुसीसे सडकोंपर चिराग़ जलते थे, पाठशालाअें चलती थीं और मंदिरोंमें पूजाका काम भी ठीक ठीक चलता था।

अुस नगरमें अेक दिन अेक आदमी आया। अुसने कहा कि मैं जादूगर हूँ। कअी अ़जब काम कर दिखाअूँगा। लेकिन अुस नगरके रहनेवाले तो सब अपने अपने काममें मस्त थे; अिसलिये अुसकी किसीने परवाह न की; सब अपने अपने काम करनेमें मशगूल रहे।

अेक दिन वह जादूगर चौकके पास खड़ा हुआ। अुसके सामने कअी बोतलें रखी हुअी थीं। वह चिल्ला चिल्लाकर अुनका बयान करने लगा—"महाशयो! भाअियो! बहनो! यह देखिये, क्या आप लोग जानते हैं कि अिन बोतलोंमें क्या है? यह है कलियुगका अमृत। बड़ी अजब दवा है। अिसका नाम जीवन-रस है। अब देखिये, अिसकी खूबी बताता हूँ। अिसकी बूँदे सूर्यकी किरणोंमें कैसी हीरे-सी झलकती हैं! अिसकी हर अेक बूँद आपमें नये जीवनका संचार करेगी। अिस कलियुगके अमृतको जरूर खरीदिये।"

जब शामको नगरवासी अपने अपने कामसे घर लौटने लगे तब अुस जादूगरकी चिल्लाहट सुनकर अुसके पास गये। वह जादूगर मीठी आवाज़में कहता गया—

" आप लोग मेरी बातोंका विश्वास न करें तो पहले अिसको पीकर देखें। बादमें पैसे दें। अैसा मीठा शरबत तो आपने जिन्दगीमें कभी न पिया होगा। कितना स्वादिष्ट पदार्थ है, वाह! अिसकी मैं कहाँ तक तारीफ़ करूँ? आप लोग दिन-भरके हारे-थके हैं। अब अिसका अेक आधा गिलास लेकर पीजिये। आपकी थकावट अेकदम गायब हो जायगी। आप लोग सच्चा सुख क्या जानें? दिन-भर तन तोड़कर मेहनत करते हैं और शामको घर लौटकर मुर्देकी तरह पड़कर सो जाते हैं। अिस अमृतको जो पियेगा अुसकी तो सारी रात बड़े आनंदमें कटेगी। नींद और चिन्ताअें पल-भरमें भाग जायँगी। रोनेवाले मारे खुशीके नाचने लगेंगे। भूखे अिसको ज़रा-सा पीयें तो भूख नहीं रहेगी। बूढ़े अिसको पीकर जवान बन जायँगे। कमज़ोर अिसको पीकर शेर बन जायँगे। बीमार नीरोग हो जायँगे। कम अक्लवाले अिसको पीकर बृहस्पति बन जायँगे। दाम अिसका बहुत कम है। फ़ी शीशी आधा आना! वाह! आधे आनेका ख्याल कर क्या आप लोग अपनेको अिस भू-लोकी अमृतसे वंचित रखेंगे? "

पहले दो-तीन रोज़ तक कोअी अिस जादूगरके फंदेमें न आया। डरते थे कि न मालूम क्या हो। लेकिन वह निराश होनेवाला न था। रोज़ अुसी चौकपर अुसकी चिल्लाहट जारी रहती थी। आखिर कुछ लोगोंका साहस हुआ कि देखें, अिसमें

है क्या। अुनकी देखादेखी और भी कुछ लोग लेकर पीने लगे। पीनेवाले अुसकी तारीफ़ करने लगे। अिस तरह अुस जादूगरका व्यापार जल्दी जल्दी बढ़ने लगा। दो-तीन सालके अंदर अुस नगरके तीन चौथाअी लोग अुसके मामूली ग्राहक बन गये। हर गलीमें अुसकी दूकान खुल गयी।

ज्यों ज्यों व्यापार बढ़ा त्यों त्यों 'अमृत' का दाम भी बढ़ा। जो शुरूमें आधा आना था वह दो आने हुआ; फिर चार आने तक पहुँच गया। लेकिन लोग अुसे पीते ही रहे।

२

माधवपुरमें कुछ बुद्धिमान लोग थे। नगरपर जो आफ़त आयी, अिससे अुन्हें बड़ी चिंता हुअी। वे लोगोंको समझाने लगे—"भाअियो! जरा सोचकर तो देखो। तन तोड़कर पैसा कमाकर अुसे अिस तरह क्यों नाहक अुड़ा देते हो? अब तो सँभलो। वह जादूगर बड़ा शैतान है। धोखेबाज है। अुसके पास भी न जाओ। वह जो बेचता है वह दवा नहीं है। मालूम नहीं क्या जादू है। आप लोगोंको ठगकर, आपके पैसे छीनकर आप सबको गहरे गड्ढेमें ढकेल रहा है। अुसके पास जाओ ही नहीं।"

लेकिन अुनकी बातोंका किसीपर कोअी असर न हुआ। अेक बार जो जालमें फँसे वे फँसे ही रहे। कहने लगे—"पैसा जाय, चाहे जो हो। वाह! अुस दवामें कैसा मज़ा है! वह तो चिन्ताओंको भगा देती है। थकावटको दूर करती है। भूखको

मिटा देती है। जोश पैदा करती है। और फिर हमें ज़रूरत ही किस बातकी है?"

लेकिन जो लोग अुसके जालमें नहीं फँसे थे वे अुन बुद्धिमानोंकी बातोंसे सचेत हो गये। वे अुस व्यापारीकी जादूगरीको समझ गये। अुन्होंने देखा कि अुसके पैसे तो दिन-प्रति-दिन बढ़ते जाते हैं और अुसके जालमें फँसे हुअे अुनके भाअी-बंधु अुसी हिसाबसे रोज़-ब-रोज गरीब होते जाते हैं। अिसलिये वे सब लोग अेक साथ मिलकर राजाके पास गये और अपनी रामकहानी सुनायी।

लोगोंके ग़रीब हो जानेसे राजाकी आमदनी भी कम हो रही थी। अिसलिये राजाने जादूगरको बुलाकर कहा—"तुम्हें तुरन्त ही अिस नगरको छोड़कर चला जाना पड़ेगा।" जादूगरने कहा—"कुछ नीच चुगलखोरोंकी बात सुनकर महाराज! आप मुझे अिस नगरसे चले जानेका हुक्म देते हैं। क्या आपको मालूम है कि अिसका क्या परिणाम होगा? आपका शासन ही भारी संकटमें पड़ जायगा। अिस नगरके अधिकांश लोग मेरी तरफ़ हैं। अुन सबको मैं हर रोज़ बेहद मज़ा देता हूँ। यहाँसे मेरे निकाले जानेकी बात जो अुन्हें मालूम हो जाय तो लोग दंगा करने लगेंगे। अिसलिये सब बातोंका खूब विचार करके फ़ैसला कीजिये। अब अिस बातको जाने दीजिये। अब यह तो बताअिये कि मेरे कारण आपको कितनेकी हानि हुअी है?"

राजाने अर्थ-मंत्रिसे पूछा। मंत्रीने कहा कि क़रीब अेक लाखकी हानि हुअी होगी। जादूगर बोला—"तो लीजिये, वह

अेक लाख रुपये मैं अभी देता हूँ। अुसके अलावा आपके निजी खर्चके लिये भी अेक लाख रुपया अलग देता हूँ। औषधालय बनानेके लिये अेक लाख रुपये और देता हूँ। अब तक अिस नगरमें पाठशालाओंके लिये अच्छा मकान नहीं है। अेक विशाल भवन बनानेके लिये कोअी पौन लाख रुपये देता हूँ। आपके कर्मचारियोंकी बड़ी शिकायत है कि तनख्वाह काफ़ी नहीं मिलती। अुनका वेतन बढ़ा दीजिये। खास अुसके लिये दो लाख रुपये और भी देता हूँ।

अुसकी अिन बातोंको सुनकर सबको बड़ा संतोष हुआ। राजाको बड़ा पश्चाताप हुआ कि अैसे अुत्तम प्रजाहितैषीको नगरसे निकाल देनेको वे तैयार हो गये। जब नगरवासियोंको ये बातें मालूम हुअीं तब वे पहलेसे भी ज्यादा अुस व्यापारीसे मेल करने लगे।

३

व्यापारीने अपने वादे पूरे किये। जिन जिन कामोंके लिये जितने रुपये देनेका वादा किया था वह सब दे दिया। लेकिन अपनी दवाका दाम फ़ी बोतल अेक आनेके हिसाबसे बढ़ा दिया। अिससे जो ज्यादा आमदनी हुअी वह अपर्युक्त दानके बराबर हुअी। अिसलिये अुसके लाभमें अेक पाअी भी कम नहीं हुअी।

राजाके दरबारमें जादूगरको बड़ा अूँचा स्थान मिला। सब तरहके आदर-सम्मान राजाके बाद अुसीको मिलने लगे। 'राव बहादुर,' 'दीवान बहादुर' आदि आदि अुपाधियाँ मिलीं।

अुसकी दूकानोंकी रखवाली पुलिसके सिपाही करने लगे। हुक्म जारी हुआ कि नगरका कोअी आदमी अुस व्यापारीके खिलाफ़ कुछ न बोले। राजद्रोहके बाद यही बड़ा अपराध माना गया।

लेकिन माधवपुरके बुद्धिमानोंको पहलेसे ज्यादा चिन्ता होने लगी—"हाय! यह क्या हुआ? हम तो गये कुआँ खोदने और अुससे निकला भूत! अब तो नगर बरबाद हो रहा है। सारी प्रजा मरती जा रही है।" लेकिन अुनकी बातोंको सुननेवाला था कौन?

अिस तरह सात-आठ साल बीते। धन-धान्यसे भरा वह नगर ग़रीबीसे दबा जाने लगा। रोग फैले। अस्पतालोंमें रोगियोंकी भीड़ होने लगी। वह ज़माना गया जब सब लोग मेहनत करके पैसे कमाते थे। खड़कोंपर भिखारियोंकी संख्या बढ़ गयी; अुनको भीख देनेवाले भी कम होते। चोरी, खून, दंगा आदि गुनाह भी खूब बढ़े। जहाँ अेक क़ैदखाना था वहाँ नौ हुअे। कोने कोनेमें पागलखाने खोले गये। बच्चे भूखके मारे और रोगके वश होकर सूखने लगे। माताअें रोने लगीं। हर कहीं रोनेकी आवाज़से दिशाअें गूँज अुठीं।

लेकिन अस व्यापारीको किसी बातकी कमी न रही। अुसकी दौलत दिन-पर-दिन बढ़ती गयी। हर साल वह अेक नया मकान बनवाने लगा। वह बड़े ठाटसे रहता था। वह प्रति मास काफ़ी धन अपने घर भेजता था। राजाको, अुसके मंत्रियोंको और अुसके अन्य कर्मचारियोंको अपने काबूमें रखता था। वह हर साल मोटा होता गया।

माधवपुरके बुद्धिमानोंमें अेक महात्मा थे। अुन्होंने देखा
कि नगरपर भारी संकट आ पड़ा है। अुन्हें मालूम हुआ कि
कुछ समय तक और चुप रहनेसे नगर अेकदम मिट्टीमें मिल
जायगा फ़ौरन ही अुन्होंने अेक बड़ी महासभा बुलायी। अुस
व्यापारीके फंदेमें पड़े हुअे लोग भी अुस सभामें काफ़ी तादादमें
अुपस्थित हुअे। वह महापुरुष राजाके क्रोधकी तनिक भी चिन्ता
नहीं करते थे। अुन्होंने अुसे व्यापारीके सभी रहस्योंको
खोल दिया।

पहले अुन्होंने याद दिलाया कि दस साल पहले माधवपुर
कैसा सम्पन्न था और प्रजा कैसी सुखी थी। फिर अुस समयकी
शोकजनक स्थितिका वर्णन किया। अुन्होंने कहा—"अिन
सबका क्या कारण है? अिनका कारण वही व्यापारी है। जबसे
वह अिस गाँवमें आया है तबसे हमारे अुपर शनिका क्रोध
सवार हो गया है। हम अुस व्यापारीके जालमें फँसे हुअे हैं,
अिसलिये सच्ची बातें हमें नहीं मालूम होतीं। अब जरा सोच-
कर तो देखिये। घरमें तो आपके बाल-बच्चे भूखों मरते हैं
और शाम हुअी नहीं कि आप अुसकी दूकानकी ओर दौड़ते हैं
क्या कोअी समझदार आदमी कभी अैसा करेगा?

"आप लोग समझते हैं कि वह राजाको धन देता है,
पाठशालाओंकी मदद करता है और औषधालयोंके लिये चंदा
देता है। लेकिन यह सारा धन वह कहाँसे लाता है? क्या अपने
घरसे लाया है? वह तो जब यहाँ आया, खाली हाथ आया था।
अुसके पास पाअी भी नहीं थी। यह सब आप ही का धन है।
आप लोगोंको नशेमें चूर करके आपके धनको लूटता है और
अुसका अेक छोटा हिस्सा सार्वजनिक कार्योंमें खर्च करता है।
अिस खर्चको क्या हम आप नहीं अुठा सकते? क्या हमारे अिस
नगरमें अुसके आनेके पहले सार्वजनिक खर्च नहीं होता था?

"आप लोग तो अुससे मिलनेवाले धनका ही ख्याल करते हैं, अुसके कारण जो खर्च बढ़ गया, क्या आपको अुसका ख्याल है? जहाँ अेक कैदखाना था वहाँ अब नौ कैदखाने हैं। अेक नया पागलखाना खुल गया है। और आमदनी कितनी कम हो गयी है? अुसकी दवा खाकर लोग कमजोर और आलसी बन गये हैं। अुससे कला कौशलका नाश होता जा रहा है। जहाँ दस रुपये मिलते थे वहाँ आज तीन रुपये मिलते हैं।

"जबसे वह अिस गाँवमें आया है तबसे रोग फैले। अन्याय बढ़ा। हमारी अच्छी आदतें छूट गयीं। भाअियो! अगर और कुछ दिन अैसे ही हम रहे तो हमारा सत्यानाश हो जायगा। अिसी क्षण अुस पापीको अिस नगरसे भगाना चाहिये। नहीं तो हम बच नहीं सकते।"

अुस महापुरुषकी अिन बातोंको सुनकर लोगोंकी आँखें खुलीं। अुन्हें मालूम हुआ कि अुनकी सारी कठिनाअियोंका वह व्यापारी ही है। तुरन्त सब लोग अेक साथ निकले और अुस व्यापारीके घर जाकर अुसे भगाने लगे। वह घरके पिछवाड़ेसे भागकर राजाके आश्रयमें गया। राजाको मालूम हो गया कि अुसका पक्ष लेनेसे अपने अुपर संकट आ पड़ेगा। अिसलिये अुन्होंने कहा —"मुझसे कुछ नहीं हो सकता। तुम यहाँ मत ठहरो। जाओ, भागो; अपनेको बचाओ।" दूसरा कोअी मार्ग न देखकर जादूगर अुस नगरको छोड़कर भाग गया। तबतक अुसकी दूकानोंकी रखवाली करनेवाले पुलिसके सिपाही भी जनताके साथ मिलकर अुसे भगाने लगे। लोग नगरसे बहुत दूर अुसे भगाकर लौटे।

अिस महापुरुषकी प्रशंसा सारी प्रजा करने लगी। फिर माधवपुर पहलेकी तरह सुसंपन्न हो गया।

कठिन शब्दार्थ

हारकी जीत—पृष्ठ १–७

खरहरा—घोड़ा साफ करनेका ब्रश
असबाब—सामान
कनखियोंसे—आँखके अिशारोंसे
अुपस्थित—मौजूद, हाज़िर
अस्तबल—घोड़े बाँधनेकी जगह
साँप लोट जाना—अीर्षा, द्वेष आदिके कारण व्याकुल होना
कंगाल—भिखमंगा, गरीब
थाम—रोक
अपाहिज—जिसके शरीरका कोअी भाग नष्ट या खराब हो गया हो
नाअीं—तरह
लापरवाह—असावधान
बहुत सिर मारा—बहुत दिमाग लड़ाया
आँखें मुखपर गड़ा दीं—आश्चर्यसे देखने लगा
निजकी—खुदकी
न्योछावर करना—सर्वस्व दे देना
सन्नाटा—स्तब्धता
बाग—लगाम
प्रतीत—मालूम
बिछुड़ा—अलग हुआ

दुखिया—पृष्ठ

तरबोर—खूब भीगा हुआ, सराबोर
अठखेलियाँ—विनोद; हंसी-मजाक
अस्त-व्यस्त—बिखरा हुआ
डबरे—पानीसे भरे छोटे गड्ढे
लोंहदी—खाना पकानेका लोहेका बर्तन
खुरपी—घास छीलनेका औज़ार
जाला—घास बाँधनेके लिये रस्सीकी बनी हुयी जाली
सृजन—सृष्टि
शाद्वल—हरी घाससे ढका हुआ
पचकल्यान—वह घोड़ा जिसके चारो पैर व सिर सफ़ेद तथा बाकी शरीर लाल या काला अथवा अन्य रंगका हो
सरपट—तेज चालसे दौड़ना
लाचार—बेबस
निरीक्षक—देख भाल करनेवाला
मढ़अी—छोटी झोपड़ी
अवसर—मौका
लाल—पक्षीका नाम

काठका घोड़ा—पृष्ठ १२–२४

नुक्कड़—नोंक, रास्तेका घुमाव
कबाड़ी—रद्दी सामानका सौदागर
कठहरा—लकड़ीकी चौकठ
चौंक जाना—अेकाअेक डर या पीडासे काँपना
पारी—बारी
मायका—पितृगृह
दुखिया—रांड़, विधवा
सिरपर बिजली गिरना—बहुत दुःख सिरपर आना
ढाढ़स—तसल्ली, धैर्य
सटपटाना—डर या लज्जासे दब जाना
गर्दा—धूल मिट्टी
कद्र—अिज्ज़त, मान
पुत्रवधू—पुत्रकी स्त्री
पितामह—पिताके पिता
पतोहू—बहू, पुत्रकी स्त्री
अचरज—आश्चर्य
अूधम—हठ करना, शोर-गुल मचाना

बफ़ाती चाचा—पृष्ठ २४–३२

झींसे—छोटी छोटी बूंदें
पोश—पहने हुअे
मस्तिष्क—दिमाग
व्यक्ति—आदमी
सौदा—लेन-देन
अधेड़—जवानी व बुढ़ापेके बिचकी आयु
अंतस्तल—दिल, हृदय
मुहल्ला—टोला, शहरका अेक हिस्सा
जुलाहे—कपड़ा बुननेवाला
पेशा—धंधा
मेड—बाँध
माचे—मचान, खाट
अँगोछा—गमछा, बड़ा रूमाल
रकाबी—तश्तरी
अहीर—दूध बेचनेवाला
गोरू—जानवर
कब्रस्तान—श्मशान
चरवाहा—चरानेवाला
नोच डाला—तोड़-मरोड़ डाला
पौंड—जानवर बंद करनेका सरकारी आहाता
ललकार—आव्हान
नियंत्रण—नियमके अनुसार संचालन
संदेह—प्रत्यक्ष
ठेंटमें—कमरमें, पासमें
हल्लेकी सीध—जिधर हल्ला हो रहा था
कौतूहल—आश्चर्य
ठक-से—चकित-से
हल्ला-गुल्ला—शोर